

परिवर्तन की वेला में
युगऋषि के संदेशवाहक बनें



परिवर्तन की वेला में युगत्रय के संदेशवाहक बनें



संपादन :
युग निर्माण योजना



प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-281003

फोन : 0565-2530128, 2530399

फैक्स : 0565-2530200

Email-yugnirman@awgp.org



पुनरावृत्ति सन् २०१०

मूल्य : 9.00 रुपए

प्रकाशक : युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-281003
फोन : 0565-2530128, 2530399
फैक्स : 0565-2530200
Email-yugnirman@awgp.org



संकलन: युग निर्माण योजना, मथुरा



मूल्य : 9.00 रुपए



मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

परिवर्तन की वेला में युगत्रय के संदेशवाहक बनें

आज व्यक्ति का चिंतन और चरित्र अधोगामी हो रहा है। इन सबके फलस्वरूप भविष्य के अंधकारमय हो जाने में कोई संदेह नहीं रह जाता। ऐसे प्रवाह को उलटना, उलट कर उलटे को सीधा करना असामान्य संकल्प है। 650 करोड़ मनुष्यों की नियति को तमिस्रा से आलोक की ओर घसीट ले जाना सामान्य कार्य नहीं है। असामान्य प्रयास असामान्य व्यक्तित्वों से ही बन पड़ते हैं। इस हेतु किसी अर्जुन का गाण्डीव संधान ही काम दे सकता है। व्यापक अंधकार से निपटने की प्रतिज्ञा कोई सविता का अंशधर ही कर सकता है। ऐसी प्रतिज्ञा जिसे पूरी करने के लिए अपना, अपने महान आधार का अस्तित्व बाजी पर लगा दिया गया है।

आज हम सबके लिए एक महत्त्वपूर्ण संदेश-निर्देश उभरता है। हम सब भी उनके दिव्य पुरुषार्थ से चमत्कृत हुए हैं। उनके साथ अपने को भावनात्मक स्तर पर जुड़ा अनुभव करते हैं। उसके लिए कुछ करना भी चाहते हैं, उनसे कुछ विशेष पाना भी चाहते हैं। यदि अपने इन सब प्रयासों में हमें सफल होना है, तो हमें उनके प्रति अपनी अवधारणाओं को अपेक्षाकृत अधिक उत्कृष्ट और व्यापक स्तर की बनाना होगा।

वे जीवन भर यह तथ्य विभिन्न ढंगों से समझाने की कोशिश भी करते रहे हैं। जब कोई कहता था कि हम दर्शन करने आए हैं, तो वे कहा करते थे “मित्रो! इस दर्शन से क्या बनेगा? मेरा जीवन दर्शन ही मेरा असली दर्शन है।” गांधीजी, ठाकुर रामकृष्ण परमहंस की काया के दर्शन तो लाखों ने किए, किंतु वास्तविक लाभ वे ही उठा सके, जिन्होंने उनके नाम, शरीर और कार्यों के पीछे सक्रिय उनके जीवन दर्शन को देखा-समझा। इसलिए वे कहते रहे कि दर्शन के लाभ तो सभी पाना चाहते हैं, किंतु दर्शन का दर्शन (फिलॉसफी) कम ही लोग समझ पाते हैं। असली लाभ उन्हीं दिव्य दर्शन पाने वालों को मिलता है। उसी को अनुभव करने की विधा को धारणा कहते हैं।

परिवर्तन की वेला में युगत्रय के संदेशवाहक बनें-3

श्रद्धांजलि का मूल्यांकन

जिस प्रकार गुरुदेव ने अपने गुरु के निर्देशों के अनुगमन का साहस जुटाया और कौशल जगाया, उसी प्रकार हम सब भी करें। शक्ति, सामर्थ्य में कमी हो सकती है, पर सदाशयता, ईमानदारी में कहीं कोई कमी न रहे। परमपूज्य गुरुदेव के द्वारा आरंभ किए गए अभियान में सहयोग किसने कितना दिया इसका मूल्यांकन इस आधार पर किया जाएगा कि किसने अपने कदम निवेदन एवं निर्देशन को सुनने, समझने एवं क्रियान्वित करने के लिए उठाए? उनके लिए कितना साहस एकत्रित किया और कितना आदर्श उपस्थित किया, जिसका अनुसरण दूसरे भी कर सकें, जिससे अपने को आत्मिक तृप्ति, तुष्टि एवं शांति का लाभ मिल सके, कहने लायक सफलता और विभूतियाँ बिना बुलाए ही चरण चूम सकें।

युगऋषि से भावनात्मक स्तर पर जुड़ें

प्रस्तुत पंक्तियों में युगऋषि बता रहे हैं कि उन्हें कैसे परिजन प्रिय हैं? इन विचारों को हम युगऋषि का आदेश मानें और तदनुरूप प्रयास करें :-

“अध्यात्म को हमने सदा उदारता, सेवा और परमार्थ की कसौटी पर कसा है और स्वार्थी को खोटा एवं परमार्थी को खरा कहा है। उन खरे लोगों की तलाश की जा रही है जो हमारे हाथ में लगी हुई मशाल को जलाए रखने में अपना हाथ लगा सकें, हमारे कंधे पर लदे हुए बोझ को हलका करने में अपना कंधा लगा सकें। ऐसे ही लोग हमारे प्रतिनिधि या उत्तराधिकारी होंगे। इस छांट में जो लोग आ जाएँगे, उनसे हम आशा लगाए रहेंगे कि मिशन का प्रकाश एवं प्रवाह आगे बढ़ाते रहने में उनका श्रम एवं स्नेह अनवरत रूप से मिलता रहेगा। हमारी आशा के केंद्र यही लोग हो सकते हैं। बातों से

परिवर्तन की बेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-4

नहीं, काम से ही किसी की निष्ठा परखी जाती है और जो निष्ठावान हैं उनको दूसरों का हृदय जीतने में सफलता मिलती है। हमारे लिए भी हमारे निष्ठावान परिजन ही प्राणप्रिय हो सकते हैं।”

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1964, पृष्ठ-51

“हमारे मन में भावनाएँ उनके लिए उफनती हैं जिनकी पहुँच हमारे अंतःकरण एवं भावना स्तर तक है। भावना शरीर ही वास्तविक शरीर होता है। हम शरीर से जो कुछ हैं, भावना की दृष्टि से कहीं अधिक हैं। हम शरीर से किसी की जो भलाई कर सकते हैं, उसकी अपेक्षा अपनी भावनाओं, विचारणाओं का अनुदान देकर कहीं अधिक लाभ पहुँचाते हैं। अनुदान ग्रहण वे ही कर पाते हैं जो भावनात्मक दृष्टि से हमारे समीप हैं। जिन्हें हमारे विचारों से प्रेम है, जिन्हें हमारी विचारणा, भावना एवं अंतःप्रेरणा का स्पर्श करने में अभिरुचि है, उन्हीं के बारे में यह कहना चाहिए कि वे तत्त्वतः हमारे निकटवर्ती एवं स्वजन संबंधी हैं। उन्हीं के बारे में हमें कुछ विशेष सोचना है, उन्हीं के लिए हमें कुछ विशेष करना है।”

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1966, पृष्ठ-42

“हमारे शरीर से नहीं विचारों से प्रेम करें। स्वाध्यायशील बनें, मनन-चिंतन करें, अपने भावनात्मक स्तर को ऊँचा उठाएँ और उत्कृष्ट मानव का निर्माण करके भारतीय समाज को देव समाज के रूप में परिणत करने के हमारे उद्देश्य को पूरा करें।”

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1966, पृष्ठ-45, 46

इन दिनों ऐसे मणिमुक्तकों की तलाश हो रही है जिनका सुगठित हार युग चेतना की महाशक्ति के गले में पहनाया जा सके। ऐसे सुसंस्कारियों की तलाश युग निमंत्रण पहुँचाकर की जा रही है। जो जीवित होंगे करवट बदलकर उठ खड़े होंगे और संकट काल में शौर्य प्रदर्शित करने वाले सेनापतियों की तरह अपने को विजयश्री वरण करने के अधिकारी के रूप में प्रस्तुत करेंगे। कृपण और कायर ही कर्तव्यों की पुकार सुनकर कांपते, घबराते और किसी

परिवर्तन की वेला में युगश्रद्धा के संदेशवाहक बनें-5

कोटर में अपना मुँह छिपाने की विडंबना रचते हैं। एक दिन मरते तो वे भी हैं, पर खेद पश्चात्ताप की कलंक-कालिमा सिर पर लादे हुए।

बिना किसी प्रदर्शन की कामना के, विज्ञापन के गुरुवर जीवन भर एक समिधा की तरह जलते रहे। एक सच्चा ब्राह्मण तपस्वी ऋषि कैसा होता है, यह हमने उनसे सीखा। वही सब एवं सतयुग की वापसी की झलक-झाँकी को, जन-जन को दिखाना है।

-अखण्ड ज्योति फरवरी 2008, पृष्ठ-63

गुरुसत्ता के अवतरण का उद्देश्य

एक बार गुरुदेव अपने सामने बैठे अपनी ही संतानों को समझाते हुए कहने लगे—“लोग सारी दुनिया को ठगते हैं, फिर मुझे भी ठगने चले आते हैं—स्वार्थी, महत्वाकांक्षी, अभिमानी कहीं के। इन सबने मुझे स्वार्थ, महत्वाकांक्षा और मनोकामना पूरी करने की मशीन समझ रखा है। इन्हें मालूम ही नहीं कि मैं इस दुनिया में क्यों आया हूँ!” यह कहते हुए उनके स्वरों में थोड़ी तेजी और तल्खी थी।

उनके सुनने वाले भी खामोश रहे। फिर उनमें से एक ने अपने प्रभु की असीम करुणा पर भरोसा करते हुए उनसे पूछा—“आप क्यों अवतरित हुए हैं इस धरती पर?” इस प्रश्न पर पहले तो वे मौन रहे, फिर धीरे से बोले—“बेटा! मैं इस समूची धरती का भाग्य और भविष्य बदलने आया हूँ।” उनके मुख से धीरे से निकले वाक्यों की गूँज गहरी थी; इतनी गहरी कि सत्ता के लोक-लोकांतरों को बेधती चली गई। महाकाल स्वयं ही आज अपने लीला-कार्य का परिचय दे रहे थे। सचमुच ही वे स्वयं न बोले होते तो उन्हें कौन जान सकता है। सुनने वाले भी उन्हें दम साधे सुन रहे थे। उन्हें अपनी गुरुसत्ता के अमोघ महातप का प्रयोजन समझ में आ रहा था।

2015 तक परिवर्तन दिखाई देगा

उन्होंने बड़ी स्पष्ट दृढ़ता से कहा—“मेरे शरीर छोड़ने के 25 वर्ष बाद मेरे कार्य की झलक दुनिया को दीखने लगेगी। इक्कीसवीं

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-6

सदी की गंगा शांतिकुंज की गंगोत्तरी से निकलकर अपना विराट रूप धारण कर लेगी। युग निर्माण आंदोलन का सूर्य किन्हीं दीवारों में कैद नहीं रहेगा। इसकी किरणें विश्व के हर देश में, दुनिया के हर कोने में चमकने लगेंगी। बस, तुम लोगों को अपना कर्तव्य किए जाना है। शेष सब ईश्वरीय सत्ता स्वयं कर लेगी।” प्रभु के उन वाक्यों की महक अब और भी तीव्र हुई है। जो उनके स्मरण और अपने समर्पण को अपनी साधना बनाएँगे, उनके हाथों से वह ऐसा कुछ करा लेंगे, जो अद्भुत और आश्चर्यजनक होगा।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 2009, पृष्ठ-40

सारे विश्व को यह बताया जाना है कि जो भी कुछ एक महामानव ने अस्सी वर्ष में जिया, किया व कहा, वही इस युग की समस्याओं का समाधान हो सकता है। सभी वादों से परे उनके जीवन भर की जो विश्व मात्र को देन रही है, उसे जन-जन के समक्ष रखना व उसके लिए माध्यम बनना-बनाना हम सभी का पुनीत कर्तव्य है। गायत्री परिवार एक विचारधार है, यह क्रांतिकारियों का समुदाय है, जिन्हें इस धरती पर लाया ही विशेष उद्देश्य के लिए गया है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 2008, पृष्ठ-67

2020 तक भारत विश्वगुरु बनेगा

हमें उन सभी संगठनों से, जो मानवता के विश्वव्यापी विस्तार के लिए देव संस्कृति को विश्व संस्कृति बनाने में लगे हैं, सहकार स्थापित कर एक समन्वित नीति भी बनानी होगी। युग निर्माण जैसा महान लक्ष्य इससे कम में पूरा होने वाला नहीं है। अधिकाधिक संस्कारवान इसमें जुड़ें, यह प्रयास हमारा होना चाहिए। “युग निर्माण के प्रवाह से सन् 2020 तक भारत विश्व का जगद्गुरु बनेगा। युग निर्माण साकार होता दिखाई देगा।” पूज्य गुरुदेव की कही गई इस बात पर हम सभी का दृढ़ विश्वास होना चाहिए। ढेर सारे संगठन बिना किसी सम्मान की या धन की अपेक्षा के भारतीय संस्कृति के

परिवर्तन की बेला में युगग्रहण के संदेशवाहक बनें-7

जागरण-विस्तार का कार्य कर रहे हैं। उन्हें केवल अपने विचारक्रांति के सूत्रों में बाँधने भर की जरूरत है। ज्यों-ज्यों वे विचारक्रांति के ज्ञानयज्ञ से जुड़ेंगे, नैतिक-आध्यात्मिक क्रांति की आवश्यकता भी समझने लगेंगे।

—अखण्ड ज्योति मई 2004, पृष्ठ-64

संगठन की सबसे बड़ी संपत्ति

संगठन का आधार यदि सही हो, तो ही वह जिंदा रहता है, लंबे समय तक चलता है एवं अपने प्रयोजन को पूरा करता है। आज इतने अधिक राजनीतिक, सामाजिक, जातीय, धार्मिक संगठन हैं, पर उनके आधार क्या हैं, यह सभी को ज्ञात है। अपने संगठन के विषय में पूज्यवर लिखते हैं—“युग निर्माण संगठन की सबसे बड़ी संपत्ति है इस परिवार के परिजनों की निष्ठा, जिसे कूटनीति एवं व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के आधार पर नहीं, बल्कि धर्म और अध्यात्म की निष्ठा के आधार पर बोया, उगाया और बढ़ाया गया है। किसी को पदाधिकारी बनने की इच्छा नहीं, फोटो छपाने के लिए एक भी तैयार नहीं, कुछ गँवाने के लिए जो आए हों, उनके बीच इस प्रकार का छल-छद्म लेकर कोई घुसने का प्रयत्न भी करे तो उस मोर का पर लगाने वाले कौए को सहज ही पहचान लिया जाता है और चलता कर दिया जाता है। यही कारण है कि इस विकासोन्मुख हलचल में सम्मिलित होने के लिए कई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षी आए, पर वे अपनी दाल गलती न देखकर वापस लौट गए। यहाँ निस्पृह, भावनाशील, परमार्थपरायण, निष्ठा के धनी को ही सिर माथे पर रखा जाता है। धूर्तता को सिर पर पाँव रखकर उलटे वापस लौटना पड़ता है। यह विशेषता यदि इस संगठन में न होती तो महत्वाकांक्षाओं ने अब तक इस अभियान को भी कब का निगलकर हजम कर लिया होता।”

ये सारी पंक्तियाँ संगठन की धुरी हैं। आत्मीयता, अध्यात्मनिष्ठा, महत्वाकांक्षाओं का विसर्जन, निस्पृह जीवन, सामूहिकता में ही

परिवर्तन की वेला में युगश्रद्धा के संदेशवाहक बनें-8

भरोसा और सबसे बड़ी बात अपने संगठन के संस्थापक के वाक्यों पर दृढ़ विश्वास ऐसा, जैसे वे ही ब्रह्मवाक्य हैं। हम सबको अपने आप को इस कसौटी पर कसना होगा कि यदि हम स्वयं को गायत्री परिवार का सदस्य मानते हैं, संगठन की एक इकाई हैं तो क्या इन कसौटियों पर खरे उतरते हैं? यह भी ध्यान रखते हैं कि कोई और व्यक्ति छद्म वेश में इस तरह प्रवेश की जुर्रत तो नहीं कर रहा? संगठन को पूज्यवर ने अपनी काया कहा है, तो फिर ऐसा कोई प्रयास उस काया पर हमले के समान ही है। ऐसे हमले न हों, इसके लिए भी हमें सतर्क रहना होगा, क्योंकि कालनेमि की माया आज भी भिन्न-भिन्न रूपों में पाई व देखी जा सकती है। सावधान हमें भी रहना है।

हमारे लक्ष्य स्पष्ट रूप में समझें

हमारे आंदोलन का लक्ष्य है—स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज; आत्मनिर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण; मानव में देवत्व एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण; सद्बुद्धि और सत्कर्म की साधना; देव संस्कृति का उन्नयन और विकास; जनमानस का भावनात्मक परिष्कार; इसके लिए विचारक्रांति, ज्ञानयज्ञ का सुनियोजन; जन-जन का साधनात्मक नियोजन, ताकि परिस्थितियाँ बदलें; समयदान और अंशदान की नियमितता; दीप-से-दीप जलाने की प्रक्रिया; सक्रिय राजनीति से दूर रहकर मतदाताओं को सच्चे लोकसेवी, ईमानदार और देश प्रेमी नेताओं को चुनने को तैयार करना; संस्कार-परंपरा का पुनर्जीवन; शिक्षा और विद्या का सार्थक समन्वय। इन सबकी धुरी पर होगा युग का नवनिर्माण। यह परिभाषा, ये शब्दावलियाँ इस महान संगठन के विराट भवन की नींव के पत्थर कही जा सकती हैं। इनका ही समन्वित स्वरूप देव संस्कृति दिग्विजय का पथ प्रशस्त कर सकता है। यही सतयुग की वापसी करेगा और इसी आधार पर भारत विश्व का जगद्गुरु पुनः बनेगा। इसीलिए संगठन के सारे ढाँचे को समझना व उसी में पूरी तरह खप जाना हम सबकी नियति होनी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 2009

परिवर्तन की बेला में युगश्रद्धा के संदेशवाहक बनें-9

अखण्ड ज्योति नवंबर 1966, पृष्ठ-45 पर लिखा है कि—
 भीड़ प्रदर्शन कर सकती है। संख्या बल-प्रदर्शन की दृष्टि से उपयोगी होती है, पर काम थोड़े से काम के व्यक्ति ही चलाया करते हैं। भीड़ का उत्साह क्षणिक होता है, जिनमें दृढ़ता और निष्ठा नहीं, वे आवेश में कुछ तूफान तो खड़ा कर सकते हैं, पर देर तक किसी आदर्श पर ठहर नहीं सकते। ऐसे लोग नारे लगाने और प्रदर्शन करने के लिए काम चलाऊ प्रयोजन पूरा कर सकते हैं, पर किसी दीर्घकालीन पारमार्थिक प्रयोजन के लिए वे कुछ अधिक काम के सिद्ध नहीं हो सकते। कोई ठोस काम हमेशा निष्ठावान आदर्श व्यक्तियों के बलबूते पर ही चलता है।

संगठन का विस्तार करें

अखण्ड ज्योति नवंबर १९६८, पृष्ठ-६५ पर लिखा है कि—
 हर प्रबुद्ध परिजन को अपने दूसरे साथियों में उल्लास और उत्साह पैदा करना है। इसलिए जहाँ जितने राष्ट्रप्रेमी परिजन हैं, वहाँ उन्हें परस्पर संपर्क, सहयोग एवं घनिष्ठ भाव पैदा करना चाहिए। ताकि एक मजबूत शृंखला में आबद्ध होकर एक दूसरे से प्रेरणा प्राप्त करने की प्रक्रिया ठीक तरह चलने लगे। अपने में से एक को भी बिछुड़ने नहीं देना चाहिए वरन् प्रयत्न यह करना चाहिए कि विशालता की अभिवृद्धि हो और संख्या की दृष्टि से हम अब की अपेक्षा दूने चौगुने हो जाएँ। बड़ी सेना अपनी उत्कृष्टता एवं विशालता के आधार पर बड़े मोर्चे फतह करती है। अपना मोर्चा बहुत बड़ा है। अति व्यापक है। समस्त संसार अपना कार्य-क्षेत्र है। जीवन की हर दिशा को प्रकाश देना और संसार की हर समस्या को सुलझाना है। इसलिए शक्ति में वृद्धि भी आवश्यक है। कहना न होगा कि संघ शक्ति इस युग की सबसे बड़ी शक्ति है। हम जितने हैं, उतने पर ही सीमित एवं संतुष्ट नहीं रह सकते हैं। मोर्चे की विशालता को देखते हुए परिवार का विस्तार होना भी अपेक्षित है।

परिवर्तन की वेला में युगत्रय के संदेशवाहक बनें-10

संगठन को सुदृढ़ बनाना आवश्यक

पूज्यवर ने अखण्ड ज्योति जून १९७१, में लिखा है कि— संगठन सुदृढ़ होना जरूरी है। भीड़ का संगठन बेकार है। मुर्दों का पहाड़ इकट्ठा करने से तो बदबू ही फैलेगी। जिनके मन में कसक है जो वस्तुस्थिति को समझ चुके हैं, उन्हीं का एक महान प्रयोजन के लिए एकत्रीकरण वास्तविक संगठन कहला सकता है। युग निर्माण परिवार संगठन में अब वे ही लोग लिए जा रहे हैं जो ज्ञानयज्ञ के लिए न्यूनतम एक रुपया और एक घंटा समय देने के लिए निष्ठा और तत्परता दिखाने लगे हैं कर्मठ लोगों का संगठन बन जाने पर प्रचारात्मक अभियान को संतोषजनक स्तर तक पहुँचा देने पर ऐसी स्थिति आ जाएगी कि जो अति महत्वपूर्ण इन दिनों शक्ति एवं स्थिति के अभाव में कर नहीं पा रहे हैं, वे आसानी से किए जा सकें।

सृजनात्मक और संघर्षात्मक कार्यक्रम की हमें अति विशाल परिमाण पर तैयारी करनी होगी। इन दिनों तो उनकी चर्चा मात्र करते हैं बहुत जोर नहीं देते क्योंकि जिस लोक-समर्थन के लिए प्रचार और कार्य कर सकने के लिए जिस संगठन की आवश्यकता है वे दोनों ही तत्व अपने हाथ में उतने नहीं हैं जिससे कि अगले कार्यों को संतोषजनक स्थिति में चलाया जा सके, पर विश्वास है कि प्रचार और संगठन का पूर्वार्ध कुछ ही दिन में संतोषजनक स्तर तक पहुँच जाएगा, तब हम सृजन और संघर्ष का विशाल और निर्णायक अभियान आसानी से छेड़ सकेंगे और उसे सरलता पूर्वक सफल बना सकेंगे।

वर्तमान की दुर्दशा और युगऋषि की प्रतिज्ञा

पूज्य गुरुदेव ने शपथ पूर्वक ज्ञानयज्ञ की महत्ता बताते हुए अखण्ड ज्योति सन् 1969 में लिखा है कि—नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान की महती प्रक्रिया को व्यापक बनाने के लिए अपना 'ज्ञानयज्ञ' इस युग का महानतम अभियान है। आज अविवेक ने विवेक का स्थान ग्रहण कर लिया है, इसे पदच्युत करना है। यह उचित न होगा कि अज्ञान की दसों दिशाओं में विजय दुदंभी बजे और ज्ञान एक कोने में पददलित बना बिलखता रहे। जनमानस में

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-11

अनाचार के प्रति सम्मान एवं आकर्षण और आदर्शवादिता के प्रति तिरस्कार, बहिष्कार की प्रवृत्ति बढ़ चले, यह असह्य है। मानव जीवन में उत्कृष्टता के लिए स्थान न मिले और पशु-प्रवृत्तियों के आधार पर सारी रीति-नीति चल पड़े, इसे दुर्घटना जैसा दुर्भाग्य ही कहना चाहिए। आदर्श चर्चा कहने और सुनने को बहुत मिलती है, पर व्यवहार में उसके दर्शन भी नहीं होते। जो सोचा और किया जाता है, वह निकृष्ट कोटि का होता है। वासना और तृष्णा के अतिरिक्त और कोई आकांक्षा ही शेष नहीं रहे तो ऐसे मानव समाज को नर-पशुओं का झुंड ही कहा जाएगा। इन परिस्थितियों में व्यक्ति को असंतोष की आग में जलते रहने और समाज को असंख्य विपत्तियों एवं उलझनों में उलझे हुए सर्वनाश की ओर बढ़ चलने के दुष्परिणाम ही भुगतने पड़ सकते हैं। सो ही सर्वग्राही विभीषिकाओं में हम व्यक्ति और समाज को बुरी तरह ग्रस्त, संतप्त और विक्षुब्ध बना देख भी रहे हैं।

इस स्थिति को यथावत नहीं चलने दिया जा सकता। देर से जिस दिशा में कदम बढ़ते चले आ रहे हैं, उन्हें और भी आगे बढ़ते रहने देने में भारी जोखिम है। अब हम सर्वनाश के किनारे पर बिलकुल आ खड़े हुए हैं। कुमार्ग जितने चल लिए उतना ही पर्याप्त है। अगले कुछ ही कदम हमें एक-दूसरे का रक्तपात करने वाले भेड़ियों के रूप में बदल देंगे। अनीति और अज्ञान से ओत-प्रोत समाज सामूहिक आत्महत्या कर बैठेगा। अब हमें पीछे लौटना होगा। सामूहिक आत्महत्या हमें अभीष्ट नहीं। नरक की आग में जलते रहना हमें अस्वीकार है। मानवता को निकृष्टता के कलंक से कलंकित बनी न रहने देंगे। पतन और विनाश हमारा लक्ष्य नहीं हो सकता। दुर्बुद्धि और दुष्प्रवृत्तियों को सिंहासन पर विराजमान रहने देना सहन न करेंगे। अज्ञान और अविवेक की सत्ता शिरोधार्य किए रहना अब अशक्य है। हम इन परिस्थितियों को बदलेंगे, उन्हें बदलकर ही रहेंगे। शपथपूर्वक परिवर्तन के पथ पर हम चले हैं और जब तक सामर्थ्य की एक बूँद भी शेष है, तब तक चलते ही रहेंगे। अविवेक को पदच्युत करेंगे। जब तक विवेक को मूर्द्धन्य बना लेंगे, तब तक

परिवर्तन की वेला में युगच्छि के संदेशवाहक बनें-12

चैन न लेंगे। उत्कृष्टता और आदर्शवादिता की प्रकाश किरणें हर अंतःकरण तक पहुँचाएँगे और वासना और तृष्णा के निकृष्ट दलदल से मानवीय चेतना को विमुक्त करके रहेंगे। मानव समाज को सदा के लिए दुर्भाग्यग्रस्त नहीं रखा जा सकता। उसे महान आदर्शों के अनुरूप ढलने और बदलने के लिए बलपूर्वक घसीट ले चलेंगे। पाप और पतन का युग बदला जाना चाहिए। उसे बदलकर रहेंगे। इसी धरती पर स्वर्ग का अवतरण और इसी मानव प्राणी में देवत्व का उदय हमें अभीष्ट है और इसके लिए भगीरथ तप करेंगे। ज्ञान की गंगा को भूलोक में लाया जाएगा और उसके पुण्य जल में स्नान कराके कोटि-कोटि नर-पशुओं को नर-नारायणों में परिवर्तित किया जाएगा। इसी महान शपथ और व्रत को ज्ञानयज्ञ के रूप में परिवर्तित किया गया है। विचार-क्रांति की आग में गंदगी का कूड़ा-करकट जलाने के लिए होलिका-दहन जैसा अपना अभियान है। अनीति और अनौचित्य के गलित कुष्ठ से विश्वमानव का शरीर विमुक्त करेंगे। समग्र कायाकल्प का, युग परिवर्तन का लक्ष्य पूरा ही किया जाएगा। ज्ञानयज्ञ की चिनगारियाँ विश्व के कोने-कोने में प्रज्वलित होंगी। विचार-क्रांति का ज्योतिर्मय प्रवाह जन-जन के मन को स्पर्श करेगा।

अपना महान अभियान गतिशील ही नहीं सफल भी होना है। व्यक्ति का दृष्टिकोण ऊँचा उठेगा तो वह देवताओं की तरह शांति प्राप्त करेगा। आदर्शों की प्रतिष्ठापना होगी तो समाज में स्वर्गीय परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी। आज की विपत्तियाँ, उलझनें और विभीषिकाएँ दैवी प्रकोप नहीं, सारा संकट मनुष्यकृत है। पथभ्रष्ट होकर हमने विपन्नताओं का वरण किया है, अब हम सही रास्ते पर चलेंगे और उसकी स्वर्णिम सतयुग जैसी परिस्थितियाँ वापस लाएँगे, जिनमें रहकर अपना और समस्त विश्व का उत्कर्ष कर सकें। इस शस्य शामला धरती पर सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं। श्रम, धन और मस्तिष्क को जितनी मात्रा में द्वेष, दुर्भाव और विनाश के आयोजनों में लगा रहे हैं, उन्हें पलटकर प्रेम, सहयोग और निर्माण में प्रयुक्त करेंगे तो कोई कारण नहीं कि इस धरती पर स्वर्ग का

परिवर्तन की वेला में युगश्रृषि के संदेशवाहक बनें-13

अवतरण न हो। केवल दिशा बदलने भर की बात है। सोचने का तरीका उलट जाए तो सब कुछ बदल ही जाएगा। हम सर्वसाधारण को विवश करेंगे कि गलत ढंग से सोचने की अपेक्षा सही ढंग से सोचें। इंद्रियों की तृप्ति और बेटे के लिए दौलत जोड़ने की क्षुद्रता से यदि व्यक्ति को बचाया जा सके और उसे अपनी क्षमताएँ लोकमंगल के लिए नियोजित करने में प्रवृत्त किया जा सके तो तुच्छ दीखने वाले यही आज नर-पशु, कल के अंगद, हनुमान, हरिश्चंद्र, प्रहलाद, शिवि, दधीच, शिवा, प्रताप, भीम, अर्जुन, तिलक, गांधी, दयानंद, शंकराचार्य, बुद्ध, महावीर, लक्ष्मीबाई, दुर्गावती की भूमिकाएँ प्रस्तुत कर सकते हैं। केवल मोह और अभिमान भर ही हटाना है। केवल सोचने की दिशाएँ भर बदलनी हैं। अपना ज्ञानयज्ञ इन्हीं साधनों से ओत-प्रोत है।

युगऋषि के उपर्युक्त विचार आज भी चिंतनीय मननीय हैं। हम सभी ज्ञानयज्ञ को सफल बनाने के लिए सकल्पबद्ध होकर जुट जाने के प्रयास से पीछे नहीं रहें।

यह विचारधारा जन-जन तक पहुँचे

अखण्ड ज्योति अगस्त 1967, पृष्ठ-40, 41 पर लिखा है कि—युग निर्माण युग निर्माण योजना के अंतर्गत इन दिनों आग उगलने वाला, जनमानस को उलट-पुलटकर रख देने वाला अत्यंत सस्ता और अत्यंत उत्कृष्ट स्तर का साहित्य सृजन किया जा रहा है, पर इसका वास्तविक लाभ तभी हो सकता है जब उसे जनसाधारण के अंतःकरण तक पहुँचने का अवसर मिले। आज लोगों में उत्कृष्ट स्तर की विचारधारा को पढ़ने, सुनने, समझने, हृदयंगम करने की तनिक भी क्षमता नहीं रही। लोगों की इस ओर जरा भी रुचि नहीं है। यह रुचि पैदा करना अपना काम है। चाय और बीड़ी के प्रचारकों के अपने प्रबल प्रयत्नों ने इन गंदी चीजों को जनजीवन का अंग बना दिया तो क्या हम गायत्री परिवार के प्रबुद्ध परिजन ऐसी जनरुचि उत्पन्न नहीं कर सकते जिसके आधार पर सर्वसाधारण के मस्तिष्क एवं अंतःकरण उलट-पुलटकर रखे जा सकें? यह संभव है और सर्वथा सरल है। युग की माँग यही है। आवश्यकता केवल हमारे थोड़े से त्याग और

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-14

थोड़े से साहस की है। इन पंक्तियों द्वारा उसी का आह्वान किया जा रहा है।

अखण्ड ज्योति अगस्त 1967, पृष्ठ-41 पर लिखा है कि—हम अभिनव विचारों का सृजन करें, परिजन उन्हें जनमानस में प्रवेश कराने का प्रबल प्रयत्न करें। पदों को पढ़ाया जाए, अनपढ़ों को सुनाया जाए तो यह विचार-क्रांति प्रत्येक व्यक्ति के अंतःकरण में एक चिनगारी बनकर जम सकती है और देखते-देखते प्रचंड ज्वाला के रूप में परिणत हो सकती है। इंजेक्शन कैसा ही उपयोगी क्यों न हो डाक्टर की उगलियाँ ही उसे रोगी के शरीर में प्रवेश करा सकती हैं। बंदूक, कारतूस कितने ही कीमती क्यों न हो, चलाएगा तो उन्हें सैनिक ही। हम कितना ही प्रेरक साहित्य विनिर्मित करें, परिजनों के प्रबल प्रयास बिना वह जनमानस में व्यापक रूप में प्रवेश न कर सकेगा। इस समस्या को हल करने के लिए परिजनों का जो भी योगदान होगा वह “ज्ञानयज्ञ” में महानतम पुण्य-परमार्थ ही माना जाएगा।

ज्ञानयज्ञ विचारक्रांति ही युगधर्म

अखण्ड ज्योति जून 1971, पृष्ठ-58, 59 पर लिखा है कि—आज की समस्त उलझनों और विपत्तियों का मात्र एक ही कारण है—मनुष्य की विचार विकृति। दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों ने ही शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, राजनैतिक संकट खड़े किए हैं। बाह्य उपचारों से, पत्ते सींचने से कुछ बन नहीं पड़ेगा, हमें मूल तक जाना चाहिए और जहाँ से संकट उत्पन्न होते हैं, उस छेद को बंद करना चाहिए। कहना न होगा कि विचारों और भावनाओं का स्तर गिर जाना ही समस्त संकटों का केंद्र-बिंदु है। हमें इसी मर्मस्थल पर तीर चलाने चाहिए। हमें ज्ञानयज्ञ और विचारक्रांति को ही इस युग की सर्वोपरि आवश्यकता एवं समस्त विकृतियों की एक मात्र चिकित्सा मानकर चलना चाहिए, और उन उपायों को अपनाना चाहिए जिनसे मानवीय विचारणा एवं आकांक्षा को निकृष्टता से विरत कर उत्कृष्टता का स्तर उन्मुख किया जा सके। ज्ञानयज्ञ की सारी योजना इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर बनाई गई है। हमें

परिवर्तन की वेला में युगश्रद्धा के संदेशवाहक बनें-15

अर्जुन को लक्ष्य भेदते समय मछली की आँख देखने की तरह केवल युग की आवश्यकता विचारक्रांति पर ही ध्यान एकत्रित करना चाहिए और केवल उन्हीं परमार्थ प्रयोजनों को हाथ में लेना चाहिए जो ज्ञानयज्ञ के पुण्य-प्रयोजन पूरा कर सकें। अन्यान्य कार्यक्रमों से हमें अपना मन बिलकुल हटा लेना चाहिए, शक्ति बखेर देने से कोई काम पूरा नहीं हो सकता। हमारा परामर्श परिजनों को यही है कि वे परमार्थ भावना से सचमुच कुछ करना चाहते हों तो उस कार्य को हजार बार इस कसौटी पर कस लें कि इस प्रयोग से आज की मानवीय दुर्बुद्धि को उलटने के लिए अभीष्ट प्रबल पुरुषार्थ की पूर्ति इससे होती है या नहीं। शारीरिक सुख-सुविधाएँ पहुँचाने वाले धर्म-पुण्यों को अभी कुछ समय रोका जा सकता है, वे पीछे भी हो सकते हैं, पर आज की तात्कालिक आवश्यकता तो विचारक्रांति एवं भावनात्मक नवनिर्माण ही है, सो उसी को आपत्ति धर्म-युगधर्म मानकर सर्वतोभावेन हमें उसी प्रयोजन में निरत हो जाना चाहिए। ज्ञानयज्ञ के कार्य इमारतों की तरह प्रत्यक्ष नहीं दीखते और स्मारक की तरह वाहवाही का प्रयोजन पूरा नहीं करते तो भी उपयोगिता की दृष्टि से ईंट-चूने की इमारतें बनाने की अपेक्षा इन भावनात्मक परमार्थों का परिणाम लाख करोड़ गुना अधिक है। हमें वाहवाही लूटने की तुच्छता से आगे बढ़कर वे कार्य हाथ में लेने चाहिए जिनके ऊपर मानव जाति का भाग्य और भविष्य निर्भर है। यह प्रक्रिया ज्ञानयज्ञ का होता-अध्वर्यु बने बिना और किसी तरह पूरी नहीं होती।

अगणित समस्याओं का हल

अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967, पृष्ठ-33 पर लिखा है कि— व्यक्ति और समाज के सामने आज अगणित समस्या, उलझनें और कठिनाइयाँ मौजूद हैं। इन्हें सामयिक उपायों से हल नहीं किया जा सकता है। समस्त कठिनाइयों का एक ही उद्गम है—मानवीय दुर्बुद्धि। इसे हटाए बिना एक भी समस्या हल न होगी और प्रतिबंधों

परिवर्तन की वेला में युगश्रष्टि के संदेशवाहक बनें-16

से, संघर्ष और युद्धों से दुष्टता को रोका नहीं जा सकेगा। उसका आध्यात्मिक स्तर पर ही समाधान संभव है। जिस उपाय से दुर्बुद्धि को हटाकर सदबुद्धि स्थापित की जा सके, वही मानव कल्याण का, विश्वशांति का समाधानकारक मार्ग हो सकता है।

ज्ञानयज्ञ का स्वरूप

अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967, पृष्ठ-33 पर लिखा है कि— एक विश्वव्यापी ऐसा विचार-क्रांति अभियान खड़ा करना होगा जिससे मनुष्य को अपनी दुर्बुद्धि को समझने और उसके द्वारा होने वाली अपार हानि का अनुमान लगाने का अवसर मिले। अब तक परंपरा के नाम पर, धर्म संप्रदाय के नाम पर लोग प्राचीन ढर्रों का पक्षपात एवं समर्थन करने के आदी रहे हैं। स्वतंत्र विचारधारा के लिए, विवेक पूजा के लिए, अवसर नहीं आने दिया गया। जो ढर्रा चल रहा है, उसी में बहते रहने में लोगों ने सरलता समझी है और जिसका अभ्यास है, उसी को उत्तम माना है। यह बौद्धिक गुलामी चिरकाल से हमारे मस्तिष्कों को आच्छादित किए हुए है, फलतः विवेकबुद्धि इतनी कुंठित हो गई है कि सत्य-असत्य और उचित-अनुचित का सही निर्णय कर सकना कठिन हो गया है। इस दुःखद मनःस्थिति का अंत किए बिना प्रस्तुत पतन प्रक्रिया से, सर्वनाश की विभीषिका से छुटकारा न मिल सकेगा।

युग की महती आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए 'युग निर्माण योजना' का प्रथम चरण 'ज्ञानयज्ञ' के रूप में प्रस्तुत हुआ है। इस अभियान के अंतर्गत हर व्यक्ति को स्वतंत्र चिंतन के लिए आमंत्रित किया जाएगा। उसे कहा जाएगा कि समस्त पूर्वाग्रह को छोड़कर, सत्य-असत्य की, उचित-अनुचित की कसौटी पर आज की प्रत्येक विचारणा, मान्यता, रीति-नीति एवं गतिविधि को परखें और केवल उसे स्वीकार करें जो विवेकसम्मत हो, न्यायसंगत एवं सचाई पर आधारित हो। जो अनुपयुक्त है, असंगत है और अविवेकपूर्ण है, उसे छोड़ दें, भले ही वह किसी के द्वारा प्रतिपादित क्यों न हो।

परिवर्तन की वेला में युगश्रष्टि के संदेशवाहक बनने-17

यही इस युग की वह विचार-क्रांति है जिसके आधार पर नई सुख-शांति भरी दुनियाँ का अभिनव निर्माण संभव होगा।

ज्ञानयज्ञ सबसे बड़ा परमार्थ

अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967, पृष्ठ-34 पर लिखा है कि— हमारा ज्ञानयज्ञ इस युग का सबसे बड़ा परमार्थ है। युग की आवश्यकता इसी से पूर्ण होगी। अभी इस अभियान को 'गायत्री परिजनों' के माध्यम से आरंभ किया गया है। उन्हें ही इसका होता, यजमान, अध्वर्यु, उद्गाता और आचार्य बनने के लिए आमंत्रित किया गया है। आरंभिक ढाँचा इसी रूप में खड़ा किया जा रहा है, किंतु क्रमशः यह आगे बढ़ेगा और समस्त विश्व के प्रत्येक नागरिक को इसमें सम्मिलित होने के लिए विवश किया जाएगा।

जिस प्रकार ईसाई धर्मप्रचारकों ने अपने मंतव्य को विश्वव्यापी बनाने और जनमानस में उतारने के लिए बाइबिल के अध्यायों को अत्यंत सस्ते मूल्य में करोड़ों की संख्या में छपा था, उसी तरह जीवन साहित्य के निर्माण ही नहीं, प्रचार की भी व्यवस्था 'ज्ञानयज्ञ' के अंतर्गत की जानी है। लेखन कार्य तीव्रगति से परिपूर्ण साहस और उत्तरदायित्व के साथ चल रहा है। 'अखण्ड ज्योति' तथा 'युग निर्माण योजना' पत्रिकाएँ अपना काम जादू की तरह कर रही हैं।

भारत की 14 भाषाओं में अनुवाद एवं प्रकाशन हो तो इस ज्ञान का प्रकाश प्रत्येक भारतवासी तक पहुँचे। इसी प्रकार संसार की प्रमुख सौ भाषाओं में उसका अनुवाद, प्रकाशन हो तो 'ज्ञानयज्ञ' का संदेश प्रत्येक विश्व-नागरिक के पास पहुँचे। आशा करनी चाहिए कि जिस परमेश्वर की प्रेरणा से यह 'ज्ञानयज्ञ' आरंभ हुआ है, वही ऐसे साधन भी बनाएगा जिनसे यह महान प्रकाश एक छोटे दायरे में ही सीमित बनकर न रह जाय।

ज्ञानयज्ञ सबसे महान और व्यापक अभियान

अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967, पृष्ठ-35, 36 पर लिखा है कि— हमारे 'ज्ञानयज्ञ' को इस युग का, इस शताब्दी का, सहस्राब्दी

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-18

का सबसे महत्त्वपूर्ण, सबसे महान एवं सबसे व्यापक अभियान कहा जा सकता है। यों धन एवं प्रदर्शन की दृष्टि से इसका रूप सामान्य ही है, पर आज आरंभिक स्थिति में भी, लाखों व्यक्ति इसके संपर्क में हैं और अपनी, अपने परिवार की तथा अन्य अनेकों की विचारधारा को उलट-पुलट करने में संलग्न हैं। यह एक ध्रुव सत्य है कि विचार बदलने के साथ मनुष्य के कार्य भी बदलते हैं। जो शक्तियाँ आज आसुरी एवं ध्वंसक बनी हुई हैं, वे यदि कल दैवी एवं रचनात्मक बन जाएँ तो विनाश के स्थान पर निर्माण की, नरक के स्थान पर स्वर्ग की गतिविधियाँ परिलक्षित होंगी।

इमारतें और कारखाने बनाना सरल है। स्कूल और बाँध भी थोड़ी अर्थव्यवस्था हो जाने पर आसानी से बन सकते हैं। असली काम व्यक्ति निर्माण का है जो जितना ही कठिन है, उतना ही महत्त्वपूर्ण भी है। ताजमहल बनाने वाले शाहजहाँ की तुलना में समर्थ गुरु रामदास द्वारा शिवाजी का निर्माण अधिक महत्त्वपूर्ण है। गांधी की तुलना टाटा के लोह संस्थानों से नहीं की जा सकती। निजाम का सारा स्वर्णकोष लोकमान्य तिलक के मूल्य से बढ़कर नहीं हो सकता। किसी समाज की असली संपत्ति उसके चरित्रवान, मनस्वी और परमार्थपरायण व्यक्ति ही होते हैं। वे ही करोड़ों जीवनों को प्रभावित करते, वातावरण को बदलते और अंधकार में प्रकाश उत्पन्न करते हैं। ऐसे सत्पुरुषों का निर्माण कार्य जिस संस्थान द्वारा होता है, उसे इस धरती पर अवतरित देवदूत ही माना जाएगा। इस दृष्टि से अपना 'ज्ञानयज्ञ' एक ऐसा ही ऐतिहासिक अभियान है जिसे भावी पीढ़ियाँ लाखों वर्षों तक विस्मरण न कर सकेंगी।

ज्ञानयज्ञ विश्वव्यापी बनेगा

'ज्ञानयज्ञ' का अभी उषाकाल है। उसमें से अग्नि की लपटें फूटने लगी हैं। अभी उसे विश्वव्यापी ऐसी प्रचंड दावानल का रूप धारण करना शेष है, जिसकी आग में मानव समाज के समस्त पाप-ताप जल जाएँ और शुद्ध स्वर्ण जैसा कांतिमान होकर वह विश्वमंगल का नया सूत्रपात कर सके। विश्व का प्रत्येक नागरिक उससे एक

परिवर्तन की वेला में युगच्छवि के संदेशवाहक बनें-19

नया प्रकाश-नया प्रभाव ग्रहण करेगा। यह सब कुछ कुतूहलवर्द्धक, प्रचार कार्य नहीं वरन मनोभूमि का परिवर्तन है जो व्यक्तियों को कुछ सुझाव मात्र नहीं देगा वरन उनकी जीवन दिशा और क्रियापद्धति को ही पलटकर रख देगा। आज जो भारभूत, निकम्मे व्यक्ति दीखते हैं कल वे ही एक से एक बढ़-चढ़कर महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ प्रस्तुत करेंगे, ऐसा होगा अपने 'ज्ञानयज्ञ' का प्रभाव। यह कल्पना नहीं, सचाई है, जिसे कुछ ही वर्षों में हर कोई अपनी इन्हीं आँखों से मूर्तिमान प्रत्यक्ष देख सकेगा।

‘ज्ञानयज्ञ’ अश्वमेध का रूप धारण करेगा

अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967, पृष्ठ-36 पर लिखा है कि—
‘ज्ञानयज्ञ’ से परिष्कृत मनोभूमि अपनी एक संघर्ष भूमिका प्रस्तुत करेगी। सड़ी-गली जीर्णता अपने विकृत रूप में जहाँ कहीं जड़ जमाए बैठी होगी, वहाँ से उसे उठाकर फेंकने के लिए एक और कदम बढ़ाना पड़ेगा। ‘ज्ञानयज्ञ’ से प्रभाव ग्रहण करने की क्षमता केवल संस्कारवान व्यक्तियों में ही होती है। जिनमें जड़ता और दुष्टता मजबूती से जड़ जमाए बैठी है, वे न इस प्रभाव को ग्रहण करते हैं और न बदलते हैं। उनके भाग्य में दुर्गति ही लिखी है। इन करालकालकी दाढ़ों में चिपके हुए मरणधर्मा सभी प्राणियों पर महाकाल का प्रकोप होना है और उनकी लाशों को ठिकाने लगाने का कार्य आखिर इन प्रबुद्ध व्यक्तियों को ही करना है। एक देवासुर संग्राम फिर होगा। गुराँने वाली असुरता का मुँह तो तोड़ा ही जाएगा। न बदलने के लिए आग्रह किए बैठे लोगों को युग के अनुरूप बदलने के लिए विवश किया ही जाएगा। इसमें हाथा-पाई होनी ही है। ‘ज्ञानयज्ञ’ अंत में एक ऐसे अश्वमेध का रूप धारण करेगा जिससे समस्त दुर्बुद्धि और दुष्टता का तिरोधान हो जाए।

गुरुदेव का वायदा

7 फरवरी 1979 को गुरुदेव ने प्रवचन में बोला—मित्रो! अकल को बढ़ाने के लिए, जनमानस के परिष्कार के लिए, युग देवता ने,

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-20

महाकाल ने पुकार लगाई है। अगर आप कृपणता को त्यागने के लिए तैयार हों, सेवावृत्ति के लिए उदारता से तैयार हों तो मैं आपसे वायदा करता हूँ कि गायत्री माता का वह चमत्कार जो ऋषियों को मिला था, ब्राह्मणों को मिला था और हमको मिला है—उसका लाभ आप भी उठा सकेंगे।

उपर्युक्त विचारों पर हम सभी गंभीरता से चिंतन-मनन करें। जैसे अश्वमेध यज्ञों में तन, मन, धन से समयदान देकर कार्य किया है, उससे ज्यादा प्रयास ज्ञानयज्ञ प्रचारक बनाने में करना चाहिए।

ज्ञानदीप प्रदीप्त रखें

अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967, पृष्ठ-38 पर लिखा है कि—हमारा 'ज्ञानयज्ञ' इस युग का सबसे महान ऐतिहासिक अभियान है। इसमें गायत्री परिवार के प्रत्येक परिजन को प्रतिस्पर्द्धापूर्वक आत्मयोग प्रदान करना चाहिए। छुटपुट अनेक पुण्य परमार्थों की बात की अपेक्षा युग की महती आवश्यकता को पूर्ण करने वाले इस एक ही अभियान को हमें एकाग्रतापूर्वक पूर्ण करना चाहिए। संस्कृति की सीता को अज्ञान असुर के चंगुल से छुड़ाना हम रीछ-वानरों का ही लक्ष्य और एक ही कार्यक्रम होना चाहिए। अनेक दिशाओं में न भटकें, अपनी समस्त श्रद्धा इस एक ही बिंदु पर केंद्रित करें। हनुमान की तरह 'राम काज कीन्हे बिना, मोहि कहाँ विश्राम' की एक ही रट लगानी चाहिए और अपने को तिल-तिल जलाकर संसार में सदज्ञान का प्रकाश करने वाले इस ज्ञानदीप को प्रदीप्त रखने में बड़े से बड़ा पुरुषार्थ, बड़े से बड़ा त्याग-बलिदान करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

विचार-क्रांति की आवश्यकता

अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1992, पृष्ठ-56 पर लिखा है कि—हमारे गुरु की आवश्यकता थी। उनके इशारे पर हम कठपुतली के तरीके से नाचते रहे। उनके इशारे का हमको ध्यान है। आज युगदेवता का, महाकाल का इशारा यह है कि हमको जनजाग्रति के लिए काम

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-21

करना चाहिए। हमको नवयुग लाने के लिए घर-घर में संदेश पहुँचाना चाहिए। विचार-क्रांति अभियान आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि इस युग की सभी समस्याएँ इसलिए पैदा हुई हैं कि आदमी की अक्ल खराब हो गई है। न पैसा कम है, न कोई चीज कम है। अक्ल खराब है। अक्ल ठीक करने के लिए हमको विचार-क्रांति में हिस्सा लेना चाहिए। व्यक्ति और समाज, देश और धर्म-संस्कृति के लिए, मानवीय भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए हमको एक काम करना चाहिए कि ज्ञानयज्ञ के विस्तार के लिए पूरी कोशिश करें, प्रयास करें। घर-घर में जाएँ, जन-जन के पास जाएँ, अलख जगाएँ, नवयुग का संदेश सुनाएँ और यह कहें कि आदमी को कृपणता छोड़नी चाहिए। अपनी मनःस्थिति को ऊँचा बनाना चाहिए। चिंतन और चरित्र में ऊँचाईयों का, उत्कृष्टता का समावेश करना चाहिए। क्रिया-कलापों में आदर्शवादिता का समन्वय करना चाहिए। यही हमारा विचार-क्रांति अभियान है।

विश्वशांति के लिए विचार-क्रांति आवश्यक

अखण्ड ज्योति अगस्त 1969, पृष्ठ-7 पर लिखा है कि— सारी विपत्तियाँ दुर्बुद्धि को उत्पन्न करती हैं। अवांछनीय विचारणाएँ ही हैं जो नरक की परिस्थितियाँ उत्पन्न करती हैं। समस्त सुविधाएँ होने पर भी यदि विचारपद्धति सही नहीं है तो व्यक्ति केवल दुःख पाता रहेगा और संबंधित लोगों को दुःख देता रहेगा। हमारी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय विपन्नताओं का कारण और कुछ नहीं केवल लोकमानस की अशुद्ध दिशा ही है। यदि भूल के इन कारणों को न सुधारा गया तो सुधारों के समस्त प्रयत्न जड़ सूखती जाने वाले पेड़ के पत्ते सींचने जैसी विडंबना सिद्ध होंगे। इसलिए यदि वस्तुतः वर्तमान विपन्नताओं का समाधान ढूँढ़ना हो तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि संसार की, विशेषतया भारतवर्ष की चिंतनपद्धति को परिष्कृत करना आवश्यक है। नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान केवल इसी एक

परिवर्तन की वेला में युगश्रृंखला के संदेशवाहक बनें-22

आधार पर संभव है। उसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं। एक सर्वतोमुखी विचार-क्रांति इस युग की सर्वप्रमुख आवश्यकता है। इसे चाहे आज संपन्न किया जाए, चाहे हजार वर्ष बाद, रास्ता इसके अतिरिक्त दूसरा है नहीं।

विचार-क्रांति आज की सबसे बड़ी आवश्यकता

अखण्ड ज्योति मार्च 1967, पृष्ठ-7 से 10 पर लिखा है कि— आज जो पाप, अनाचार, दंभ, छल, असत्य, शोषणों आदि दोषों का बाहुल्य होने से समाज में भारी अव्यवस्था उत्पन्न हो रही है, उसके लिए किन्हीं अमुक व्यक्तियों को दोषी ठहराने या उन्हें मारकाट देने से समस्या का हल नहीं हो सकता। अब विचार परिवर्तन ही एकमात्र वह आधार रह गया है, जिसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के कष्टों का सृजन करने वाले दुर्गुणों को निरस्त किया जा सके और न्याय तथा शांति की स्थापना की जा सके।

इस युग की सबसे बड़ी शक्ति शस्त्र नहीं रहे वरन उनका स्थान विचारों ने ले लिया है। चूँकि अब शक्ति जनता के हाथ में चली गई है। जनमानस का प्रवाह जिस दिशा में बहता है, उसी तरह की परिस्थितियाँ बन जाती हैं। इस जन-प्रवाह को शस्त्रों से नहीं, विचारों से ही रोका जा सकता है। यह तनिक भी अत्युक्ति नहीं समझी जानी चाहिए कि अब शस्त्र युद्ध का जमाना चला गया। आज तो विचारयुद्ध का युग है। जो विचार प्रबल होंगे, वे ही अपने अनुकूल-अनुरूप परिस्थितियाँ उत्पन्न कर लेंगे।

वास्तविक शक्ति तो इस युग में विचार पद्धति की प्रखरता पर ही आधारित है। लोक मानस जिस विचारधारा से प्रभावित होगा, वैसी ही परिस्थितियाँ उस समाज में विनिर्मित होने लगेंगी। विचार-क्रांति, जिसका अर्थ है—मनुष्य के आस्था स्तर को निकृष्टता से विरत कर उत्कृष्टता की ओर अभिमुख करना, आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। विश्वमानव उसी के लिए तड़प रहा है। युग की यही पुकार है। संसार का उज्ज्वल भविष्य इसी प्रक्रिया द्वारा संभव है। इतने आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण प्रयोजन की पूर्ति के लिए

परिवर्तन की वेला में युगश्रष्टि के संदेशवाहक बनें-23

हर प्रबुद्ध व्यक्ति को कुछ सोचना ही होगा और करना ही होगा। अन्यमनस्क बैठे रहने से तो हम अपनी आत्मा के सामने कर्तव्यघात के अपराधी ही ठहरेंगे।

हम क्या करें?

अखण्ड ज्योति जून 1984, पृष्ठ-61 पर लिखा है—कि क्या करें? इस प्रश्न का इन दिनों एक ही उत्तर है—विचार-क्रांति के युगधर्म का परिपालन करने के लिए एकनिष्ठ भाव से जुट पड़ें। आज की समस्याएँ अगणित हैं। उनके स्वरूप और प्रतिफल भी भिन्न-भिन्न हैं, किंतु यह मानकर चलना होगा कि सभी का निमित्त कारण एक है—चिंतन में विकृतियों का भर जाना। आस्था संकट ही अपने युग का सबसे बड़ा विनाश का कारण है। इससे बड़ा दुर्भिक्ष और कोई हो नहीं सकता। निराकरण का उपाय भी एक ही है। उलटे को उलटकर सीधा करना। यदि लोकमानस को परिवर्तित-परिष्कृत किया जा सके तो हर समस्या सरलतापूर्वक सुलझने लगेगी। नाली की कीचड़ साफ किए बिना मक्खी-मच्छरों से पीछा छूटना कठिन है। हमें युगधर्म के रूप में विचार-क्रांति को ही मान्यता देनी चाहिए और छुटपुट कार्यों में ध्यान बँटाने, शक्ति खपाने की अपेक्षा इसी काम में जुट जाना चाहिए। इस मंत्र को गुणगुनाते रहना चाहिए कि जिन्हें अपना ढिंढोरा पिटवाना ही अभीष्ट हो वे चित्र-विचित्र योजनाएँ बनाते और सेवा के नाम पर कौतुक-कुतूहल खड़े करते रहें, पर जिन्हें एक ही ताली से सब ताले खोलने का मन हो, वे विचार परिवर्तन के कार्य को सर्वोपरि मानकर उसी को लक्ष्य रखें और उसी से संबंधित कार्यों में हाथ डालें।

घर-घर अलख जगाया जाए

अखण्ड ज्योति अगस्त १९८५, पृष्ठ-६५ पर लिखा है कि—प्रज्ञा परिवार सृजन का संकल्प लेकर चला है। उसके सदस्यों सैनिकों का स्तर ऊँचा होना चाहिए। ऐसा ऊँचा इतना अनुशासित कि उसके कर्तृत्व को देखकर अनेक की चेतना जाग पड़े और पीछे

परिवर्तन की वेला में युगश्रष्टि के संदेशवाहक बनें-24

चलने वालों की कमी न रहे। बढ़िया साँचों में ही बढ़िया आभूषण पुर्जे या खिलौने ढलते हैं। यदि साँचे ही आड़े-तिरछे हों तो उनके संपर्क क्षेत्र में आने वाले भी वैसे ही घटिया, वैसे ही फूहड़ होंगे। इसी प्रयास को संपन्न करने के लिए कहा गया है। इसी को उच्चस्तरीय आत्मपरिष्कार कहा गया है। यही महाभारत जीतना है। जननेतृत्व करने वालों को आग पर भी, कसौटी पर भी खरा उतरना चाहिए। लोभ, मोह और अंहकार पर जितना अंकुश लगाया जा सके, लगाना चाहिए। तभी वर्तमान प्रज्ञा परिजनों से यह आशा की जा सकेगी कि वे अपनी प्रतिभा से अपने क्षेत्र को आलोकित कर सकेंगे और सृजन का वातावरण बना सकेंगे।

दूसरा कार्य यह है कि नवयुग के संदेश को और भी व्यापक बनाया जाए। इसके लिए जन-जन से संपर्क साधा जाए। घर-घर अलख जगाया जाए। मिशन की पृष्ठभूमि से अपने समूचे संपर्क क्षेत्र को अवगत कराया जाए। पढ़ाकर भी और सुनाकर भी। इन अवगत होने वालों में से जो भी उत्साहित होते दिखाई पड़ें, उन्हें कुछ छोटे-छोटे काम सौंपे जाएँ। भले ही वे जन्मदिन मनाने जैसे अति सुगम और अति साधारण ही क्यों न हों, पर उनमें कुछ श्रम करना पड़ता, कुछ सोचना और कुछ कहना पड़ता है। तभी वह व्यवस्था जुटती है। ऐसे छोटे आयोजन संपन्न कर लेने पर मनुष्य की झिझक छूटती है, हिम्मत बढ़ती और वह क्षमता उदय होती है, जिसके माध्यम से नव सृजन प्रयोजन के लिए जिन बड़े-बड़े कार्यों की आवश्यकता है, उन्हें पूरा किया जा सके। जो कार्य अगले दिनों करने हैं, वे पुल खड़े करने, बाँध बांधने, बिजली घर तैयार करने जैसे विशालकाय होंगे। इसके लिए इंजीनियर नहीं होंगे, और न ऊँचे वेतन पर उनकी क्षमता को खरीदा जा सकेगा। वे अपने ही रीछ वानरों में से होंगे। समुद्र पर पुल बांधने जैसे कार्य में नल-नील जैसे प्रतिभावान भावनाशील ही चाहिए। इसके लिए बुद्ध, गांधी, विनोबा जैसे चरित्र भी चाहिए और प्रयास भी।

परिवर्तन की वेला में युगश्रष्टि के संदेशवाहक बनें-25

कार्यकर्ता निस्पृह सेवाभावी रहें

अखण्ड ज्योति जनवरी 1988, पृष्ठ-57 पर लिखा है कि—
विनोबा जी कहते रहते थे कि किसी संस्था को तभी तक जीवित रहना चाहिए जब तक उसके कार्यकर्ता निस्पृह और सच्चे सेवाभावी हों। वे न रहें या घट जाएँ तो उन्हें विलासी प्रलोभन के सहारे रोके रहना व्यर्थ है। इस कसौटी पर प्रज्ञा परिजन अब तक निरंतर खरे उतरते रहे हैं और उनके सेवाकार्यों से संतुष्ट जनता उन्हें इतना सम्मान और सहयोग प्रदान करती है कि उनकी ब्राह्मणोचित निर्वाह आवश्यकताएँ निरंतर पूरी होती रहें। साथ ही इस परमार्थी वर्ग की संख्या भी बढ़ती रहती है। आमतौर से सादगी का ब्राह्मणोचित जीवन लोगों को रास नहीं आता। सभी आलसी और विलासी रहना चाहते हैं।

समय का प्रभाव के सर्वथा विपरीत शक्तिकेंद्र के साथ जुड़े हुए और निजी जीवन में बढ़-चढ़कर आदर्श उपस्थिति करने वाले सद्गृहस्थ घर रहकर भी पुरातन काल के ब्राह्मणों जैसी जीवनचर्या अपनाते हैं। जो गड़बड़ करते हैं, मार्ग भ्रष्ट होते हैं, वे मार्ग से हट जाते हैं या हटा दिए जाते हैं। जनसमुदाय ऐसे व्यक्तियों को किसी भी स्थिति में बरदाश्त नहीं करता व लोकैषणा में उलझा व्यक्ति स्वयं अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारकर ग्लानि भरा जीवन जीता देखा जाता है।

आज जबकि सर्वत्र कर्मठ लोकसेवियों की भारी कमी अनुभव की जाती है, तब अपने परिवार में उनका बाहुल्य क्यों है? इसका पत्रिका के पृष्ठों पर अंकित सजीव प्रतिपादन ही एक कारण नहीं है वरन दूसरा गहरा और ठोस कारण है—उसके सूत्र संचालकों की कथनी और करनी की एकता वाला ज्वलंत जीवन, अनुकरणीय अभिनंदनीय स्तर का जीवनयापन जिसे खुली पुस्तक की तरह हर कोई देखता और पढ़ता रहता है।

सुसंस्कृत व्यक्तित्वों की आवश्यकता

अखण्ड ज्योति मार्च 1964, पृष्ठ-57 पर लिखा है कि—युग निर्माण के उपर्युक्त परिस्थितियाँ वे लोग उत्पन्न करेंगे जिनमें मूलतः

परिवर्तन की वेला में युगश्रृंखला के संदेशवाहक बनें-26

उत्कृष्ट स्तर की शक्ति, क्षमता, प्रतिभा आस्था विद्यमान हो। यह क्षमता भाषण सुनने या लिखने-पढ़ने से ही उत्पन्न नहीं होती वरन उसके लिए जन्मजात संस्कारों की भी आवश्यकता रहती है। आज धर्म और अध्यात्म पर भी राजनैतिक विषयों की भाँति ही धुआँधार भाषण होते हैं। कीर्तन, कथा, रामायण, यज्ञ आदि के उत्सव समारोह आए दिन होते रहते हैं जिनमें धर्म विषयों पर विद्वत्तापूर्ण भाषण होते हैं। रामलीला, गंगास्नान के मेले, कुंभ आदि के पर्व ग्रामों-तीर्थों आदि में भी ऐसा वातावरण बनता है, जिससे यदि मनुष्य चाहे तो बहुत कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सकता है।

पत्र-पत्रिकाओं, कर्तव्य बोधक लेख, गीता, रामायण जैसी प्रधान धार्मिक पुस्तकों की प्रतियाँ लाखों की संख्या में हर वर्ष छपती हैं। लोगों द्वारा खरीदी, पढ़ी जाती हैं। ऐसा साहित्य और भी जगह छपा और फैलाया जाता है। इस प्रकार भाषण और लेखन द्वारा निरंतर प्रयास किया जा रहा है कि लोग अच्छे बनें।

इन बातों को लोग पढ़ते-सुनते नहीं सो भी बात नहीं है, पर देखा यह जाता है कि चिकने घड़े की तरह लोग उससे मनोरंजन मात्र कर लेते हैं। उसे जीवन में उतारने के लिए एक कदम भी आगे बढ़ने को तैयार नहीं होते और तो और, धर्म एवं आध्यात्मिकता के प्रवचनकर्ता और लेखक स्वयं भी अपनी कथनी की अपेक्षा करनी से बहुत पिछड़े रहते हैं। कई बार तो उनका आचरण बिलकुल उलटा देखा जाता है। धर्म जीवन में उतारने की वस्तु है। आचरण में लाने पर ही कोई लाभ और प्रभाव अनुभव किया जा सकता है।

नए युग की रचना के लिए ऐसे व्यक्तित्वों की ही आवश्यकता है जो वाचालता और प्रपोगेंडा से दूर रहकर, अपने जीवनों को प्रखर एवं तेजस्वी बनाकर अनुकरणीय आदर्श उपस्थिति करें और जिस तरह चंदन का वृक्ष आस-पास के पेड़ों को सुगंधित कर देता है, उसी प्रकार अपनी उत्कृष्टता से अपना समीपवर्ती वातावरण भी सुरभित कर सकें। अपने प्रकाश से अनेकों को प्रकाशवान कर सकें।

परिवर्तन की वेला में युगश्रद्धि के संदेशवाहक बनें-27

आदर्श व्यक्तित्वों की आवश्यकता

अखण्ड ज्योति मार्च 1964, पृष्ठ-58 पर लिखा है कि—धर्म को आचरण में लाने के लिए निस्संदेह बड़े साहस और बड़े विवेक की आवश्यकता है। कठिनाइयों का मुकाबला करते हुए सदुद्देश्य की ओर धैर्य निष्ठापूर्वक बढ़ते हुए चलना मनस्वी लोगों का काम है। ओछे और कायर मनुष्य दस-पाँच कदम चलकर ही लड़खड़ा जाते हैं। किसी के द्वारा आवेश या उत्साह उत्पन्न किए जाने पर थोड़े समय श्रेष्ठता के मार्ग पर चलते हैं, पर जैसे ही आलस्य, प्रलोभन या कठिनाई का छोटा-मोटा अवसर आया कि बालू की भीत की तरह आँधे मुँह गिर पड़ते हैं। आदर्शवाद पर चलने का मनोभाव देखते-देखते अस्त-व्यस्त हो जाता है। ऐसे ओछे लोग अपने को न विकसित कर सकते हैं और न शांतिपूर्वक सज्जनता की जिंदगी ही जी सकते हैं, फिर इनसे युग निर्माण के उपर्युक्त उत्कृष्ट चरित्र उत्पन्न करने की आशा कैसे की जाए? आदर्श व्यक्तित्वों के बिना दिव्य समाज की भव्य रचना का स्वप्न साकार कैसे होगा? गाल बजाने वाले, पर उपदेश कुशल लोगों के द्वारा यह कर्म यदि संभव होता तो वह अब से बहुत पहले ही संपन्न हो चुका होता। जरूरत उन लोगों की है जो आध्यात्मिक आदर्शों की प्राप्ति को जीवन की सबसे बड़ी सफलता अनुभव करें और अपनी आस्था की सचाई प्रमाणित करने के लिए बड़ी से बड़ी परीक्षा का उत्साहपूर्ण स्वागत करें।

आदर्श व्यक्तित्व की किसी देश या समाज की सच्ची समृद्धि माने जाते हैं। राष्ट्रीय प्रगति के लिए एकमात्र उपकरण प्रतिभाशाली, चरित्रवान व्यक्तित्व ही होते हैं। हमें युग निर्माण के लिए ऐसी ही आत्माएँ चाहिए। इनके अभाव में अन्य सब सुविधा-साधन होते हुए भी अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति में तनिक भी प्रगति न हो सकेगी।

साहस के धनी कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता

अखण्ड ज्योति अगस्त 1987, पृष्ठ-22 पर लिखा है कि—कितने ही महान आंदोलन संसार में चले और व्यापक बने हैं। इनके

परिवर्तन की वेला में युगश्रष्टि के संदेशवाहक बनें-28

मूल में एक-दो व्यक्तियों का ही पराक्रम काम करता रहा है। जो अपनी उड़ाई आँधी के साथ अनेकों को आसमान तक उठा ले गए, वे न तो महाबली योद्धा थे और न साधन संपन्न करोड़पति। गांधी जी ने जो आँधी चलाई उसके साथ लाखों पत्ते और तिनके जैसी हस्ती वाले गगनचुंबी भूमिकाएँ निभाने लगे। ऐसे आंदोलन समय-समय पर अपने देश और विदेशों में उठते रहे और व्यापक बनते रहे हैं। इनके मूल में एक-दो मनस्वी लोगों के संकल्प और प्रयत्न ही काम करते रहे हैं। इसीलिए संसार के मनुष्यों में सबसे बड़ा बल, मनोबल ही माना गया है। संकल्प और निश्चय तो कितने ही व्यक्ति करते हैं, पर उन पर टिके रहना और अंत तक निर्वाह करना हर किसी का काम नहीं। विरोध, अवरोध सामने आने पर कितने ही हिम्मत हार बैठते हैं और किसी बहाने पीछे लौट पड़ते हैं, पर जो हर परिस्थिति से लोहा लेते हुए अपने पैरों अपना रास्ता बनाने और अपने हाथों अपनी नाव खेकर उस पार तक पहुँचते हैं, ऐसे मनस्वी बिरले ही होते हैं। मनोबल ऐसे साहस का ही नाम है।

प्राणवान बनें कष्ट उठाने को तैयार रहें

अखण्ड ज्योति नवंबर 2006, पृष्ठ-49, 50 पर लिखा है कि—मित्रो! तप वहाँ से आरंभ होता है, जबकि हमको भिन्न-भिन्न कामों के लिए कष्ट उठाने के लिए तैयार रहना पड़ता है। आपने देखा होगा कि अच्छे काम करने वालों को गालियाँ पड़ती हैं। समाज-सुधारकों को रोज गालियाँ पड़ती हैं। स्वामी दयानंद को जहर खिला दिया गया। गांधी जी को गोली मार दी गई। श्रीकृष्ण जी को तीर मार दिया गया। वे सब, जिन्होंने समाज की विकृतियों से लोहा लिया, सबको मुसीबतें उठानी पड़ीं। आप स्वेच्छा से तैयार हो जाइए और कहिए कि मुसीबतो! आपका स्वागत है, कठिनाइयो! आपका स्वागत है। लोग आपको गाली देंगे। गालियाँ देने वालो! आपका स्वागत है। बेटे! मैं तो हरदम कहता रहता हूँ कि गांधी जी के चेलों ने गोलियाँ खाई थीं। आचार्य जी का जो कोई चेला बनना चाहता है, व कम से कम गालियाँ खाकर के तो आए। 'बॉस' की

परिवर्तन की वेला में युगश्रद्धा के संदेशवाहक बनें-29

गाली खाकर के आए, बीबी की गाली खाकर के आए। पड़ोसी की गाली खाकर के आए। जब आप श्रेष्ठ सिद्धांतों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए खड़े हो गए हों तो जिन-जिन लोगों के स्वार्थों को आघात पहुँचता होगा, वे सब आपकी बुराई करेंगे और ढेरों गालियाँ देंगे, रात को नुकसान कर जाएँगे, 'बॉस' आपका ट्रांसफर करा देगा, करेक्टर रोल खराब कर देगा, जुरमाना करा देगा। मित्रो! आपको मुसीबतें और कठिनाइयाँ उठाने के लिए तपस्वी का जीवन जीना चाहिए। अपने अंदर क्षमताओं का विकास करना चाहिए। आपको उदार बनना चाहिए, दानी बनना चाहिए। आपको प्राणों से भरा होना चाहिए, ताकि आप मुसीबतें उठा सकें।

सुधारकों को कष्ट सहना पड़ता है

अखण्ड ज्योति अगस्त 1979, पृष्ठ-53 पर लिखा है कि— संगठित अभियानों को नष्ट करने के लिए कार्यकर्ताओं में फूट डालने, बदनाम करने, बल प्रयोग से आतंकित करने, जैसे प्रयत्न सर्वत्र हुए हैं। ऐसा क्यों होता है, यह विचारणीय है। सुधारक पक्ष को अवरोधों का सामना करने पर उनकी हिम्मत टूट जाने, साधनों के अभाव से प्रगति क्रम शिथिल या समाप्त हो जाने जैसे प्रत्यक्ष खतरे तो हैं, किंतु परोक्ष रूप से इसके लाभ भी बहुत हैं। व्यक्ति की श्रद्धा एवं निष्ठा कितनी सच्ची और कितनी ऊँची है, इसका पता इसी कसौटी पर कसने से लगता है कि आदर्शों का निर्वाह कितनी कठिनाई सहन करने तक किया जाता रहा। अग्नि में तपाए जाने और कसौटी पर कसे जाने से कम में, सोने के खरे-खोटे होने का पता चलता ही नहीं। आदर्शों के लिए बलिदान से ही महामानवों की अंतःश्रद्धा परखी जाती है और उसी अनुपात से उनकी प्रामाणिकता को लोकमान्यता मिलती है। जिनको कोई कठिनाई नहीं सहनी पड़ी, ऐसे सस्ते नेता सदा संदेह और आशंका का विषय बने रहते हैं। श्रद्धा और सहायता किसी पर तभी बरसती है, जब वह अपनी निष्ठा का प्रभाव प्रतिकूलताओं से टकरा कर प्रस्तुत करता है।

परिवर्तन की वेला में युगश्रृंखला के संदेशवाहक बनें-30

युग परिवर्तन को विश्वव्यापी बनाना है

अखण्ड ज्योति मार्च 1967, पृष्ठ-42 पर लिखा है कि— अगले दिनों हमें बड़े-बड़े काम करने हैं। युग परिवर्तन का कार्य अपने देश और अपने समाज के नवनिर्माण से आरंभ करके उसे विश्वव्यापी बनाना है। अपने सामने अनेक समस्याएँ उलझी पड़ी हैं, अनेक आवश्यकताएँ अपनी पूर्ति के लिए पुकार रही हैं, उनका समाधान उचित रीति से करने के लिए विशालकाय व्यवस्थाएँ जुटाई जानी हैं, किंतु यह सब कौन करे, किन साधनों से करे, यह प्रथम प्रश्न है। उत्कृष्ट व्यक्तित्व जो नवनिर्माण के महान प्रयोजन की पूर्ति के लिए अभीष्ट क्षमता से संपन्न हों, वे ही हमारी प्रथम आवश्यकताएँ हैं। महल बनाने के लिए, भूमि खोदने के लिए सबसे पहले फावड़ा चाहिए। फावड़ा न हो तो योजना का आरंभ कैसे हो? बातूनी, कायर, स्वार्थी, संकीर्ण और ओछे मनुष्यों से अपना समाज भरा पड़ा है। जिनकी भावनाएँ उत्कृष्टता से भरी हुई हों और जिनकी गतिविधियाँ आदर्शवादिता के लिए तड़पें, ऐसे व्यक्तित्व जब तक उभरकर ऊपर न आएँ, तब तक बिल्ली के गले में घंटी बाँधने जैसे कठिनाई ही होगी। आरंभ इसी आवश्यकता की पूर्ति से किया जाना चाहिए। वही किया भी जा रहा है।

वर्तमान की अगणित समस्याएँ

अखण्ड ज्योति मार्च 1967, पृष्ठ-43 पर लिखा है कि—देश के सामने महँगाई और अन्न-संकट की समस्या है। अपराध बढ़ रहे हैं और हर व्यक्ति अपने को असुरक्षित समझने लगा है। पारस्परिक व्यवहार इतने दूषित हो गए हैं कि किसी पर विश्वास करना कठिन हो रहा है, पर बिना विश्वास किए काम नहीं चलता है। मांसाहार की दुष्प्रवृत्ति गौ तथा दूसरे उपयोगी प्राणियों को सफाचट करती जा रही है। नशेबाजी में विपुल धन खर्च होता है और बदले में अस्वस्थता पल्ले बँधती है। शिक्षा केवल 60 प्रतिशत तक पहुँच सकी है, 40 प्रतिशत अब भी देश में अनपढ़ हैं। गरीबी के कारण जीवन विकास के सभी द्वार बंद हैं। विवाह शादियों में होने वाला अपव्यय समाज

परिवर्तन की वेला में युगश्रष्टि के संदेशवाहक बनें-31

की कमर तोड़कर रखे दे रहा है। देश का आधा अंग स्त्री समाज पिंजड़ों में बंद पक्षियों की तरह बेबस, बेजुबान और बेकार होकर जी भर रहा है। जाति-पाँति, ऊँच-नीच और भेदभाव ने समाज को हजारों टुकड़ों में बाँटकर विसंगठित कर दिया है। रूढ़िवादिता, ढोंग और अंधविश्वास ने लोगों को बौद्धिक पराधीनता में जकड़ दिया है। सर्वसाधारण का स्वास्थ्य बुरी तरह गिरता जा रहा है। राजनेता जिस अदूरदर्शिता और घटिया चरित्र का परिचय दे रहे हैं, उससे उद्विग्नता और निराशा बढ़ रही है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और वैज्ञानिक प्रगति विश्वमानव के लिए सर्वनाश का कारण बनी हुई है। विलासिता की अभिवृद्धि से लोग कायर और कुचाली बनते चले जा रहे हैं। स्वार्थपरता और संकीर्णता ने प्रत्येक क्षेत्र को धूर्तता, दुष्टता और अनैतिकता के बाहुल्य से भर दिया है।

उपर्युक्त प्रकार की अगणित समस्याएँ हमारे सामने हैं। ये अपने हल माँगती हैं। यदि उन्हें ऐसे ही पड़ा रहने दिया गया तो अगले थोड़े ही दिनों में सर्वनाशी और सर्वग्राही संकट मानव समाज के सामने उठ खड़ा होगा और लाखों करोड़ों वर्ष की संग्रहीत सभ्यता सहित मानव समाज अपनी सामूहिक आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाएगा। इस विभीषिका से बचने के लिए हमें प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक स्तर के रचनात्मक आयोजन कार्यान्वित करने होंगे। नरक को स्वर्ग में परिणत करने के लिए अगणित प्रकार के अगणित स्तर के, अगणित कलेवरों के, अगणित रचनात्मक एवं संघर्षात्मक आयोजन प्रस्तुत करने पड़ेंगे। छोटे मोटे बाँध बनाने के लिए कितने इंजीनियर, कितने ओवरसियर, कितने मजदूर, कितने यंत्र, कितने वाहन, कितने साधन और कितने धन की आवश्यकता पड़ती है, यह हम रोज ही देखते हैं। फिर युग निर्माण जैसे महान निर्माण के लिए कितने व्यक्तियों और कितने साधनों की जरूरत पड़ेगी, इसका अनुमान लगाना कुछ अधिक कठिन नहीं होना चाहिए। जादू की फूँक मार देने मात्र से इतने बड़े प्रयोजन पूर्ण नहीं होते। इसके लिए वैसी ही महान उपलब्धियाँ विनिर्मित करनी पड़ेंगी, जैसा कि महान लक्ष्य एवं आयोजन है।

परिवर्तन की वेला में युगग्रहण के संदेशवाहक बनें-32

समाधान कौन करेगा?

अखण्ड ज्योति मार्च 1967, पृष्ठ-43, 44 पर लिखा है कि—
बात फिर घूम-फिरकर वहीं आ जाती है। यह सब करेगा कौन ?
देश में न पैसे की कमी है, न योग्यता की, न साधनों की और न
सुविधाओं की। कमी केवल एक ही बात की है—इनसान बहुत
छोटे, ओछे और बौने हो गए हैं। उन्हें वासना और तृष्णा की कीचड़
अपने दलदल में बुरी तरह फँसाए हुए है। बेचारे नाली के कीड़ों की
तरह बुजबुजाती हुई जिंदगी जीते हैं। आदर्शवादिता और उत्कृष्टता
उनके लिए कहने या सुनने भर की ऐसी चीज है, जिसे व्यवहार में
लाने की कोई आवश्यकता नहीं। ऐसे लोग स्वयं ही धरती के
भारभूत हैं। जिंदा रहकर स्वयं ही परेशान नहीं होते, दूसरों को भी
अपार कष्ट देते हैं। इन शुद्ध प्राणियों को दयनीय ही कहा जा सकता
है, भले ही वे मनुष्य का कलेवर धारण कर शौक-मौज की जिंदगी
जीते हों। इस स्तर के लोग, जो स्वयं एक समस्या बने रहते हैं, वे
देश, धर्म, समाज, संस्कृति के पुनरुत्थान में—विश्व भाग्य के
नवनिर्माण में भला क्या योग दे सकते हैं ? बात छोटी है, पर उसमें वे
सभी महान संभावनाएँ बीज रूप में विद्यमान हैं जो ठीक तरह
विकसित की जा सकीं तो फैलकर एक महान वटवृक्ष के रूप में
परिणत होंगी।

अगले कुछ ही दिनों में एक महानतम—सर्वांगीण-सार्वभौम
आंदोलन एक प्रचंड दावानल की तरह प्रकट होने वाला है। उसके
अनेक रूप और अनेक प्रकार होंगे, अनेक नामों से, अनेक संगठनों
के द्वारा अनेक रूपों में अनेक व्यक्तियों द्वारा वह चलेगा। धर्मक्षेत्र से
लेकर अर्थक्षेत्र, समाजक्षेत्र, राज्यक्षेत्र तक में एक महानतम विचार-
क्रांति उत्पन्न होगी। वह विचार परिवर्तन नए युग का सृजन करेगा।
उस प्रयोजन की पूर्ति के लिए अनेक सृजनात्मक प्रवृत्तियाँ चलेंगी
और धरती को लाल कर देने वाले अनेक संघर्ष होंगे। युग-परिवर्तन
की बात आज हँसी-दिल्लगी जैसी लगती है, पर उसकी प्रचंडता

परिवर्तन की वेला में युगत्रय के संदश वाहक बनें-33

अगले दिनों हर आँखों वाला देख सकेगा। इस समुद्र-मंथन के बाद जो अमृत निकलेगा उसी को पीकर मानव जाति देवत्व, अमरत्व एवं धरती पर स्वर्ग अवतरित करने वाले सतयुग का आनंद उपलब्ध करेगी। गायत्री परिवार द्वारा आरंभ की गई इस पुण्य प्रक्रिया का, युग निर्माण योजना का यही प्रयोजन है। इसके लिए जनमानस में उत्कृष्टता की, विवेकशीलता की, लोकमंगल के लिए मानवोचित कर्तव्यपालन करने की ज्योति का जागरण किया जाना आज की सर्वप्रथम सर्वप्रधान आवश्यकता है।

उच्चस्तरीय भावनाएँ जाग पड़ने से आज के निकम्मे प्रतीत होने वाले व्यक्ति ही कल नर-रत्नों और अनेक महापुरुषों में परिणत हो जाएँगे। आज जो स्वयं भार बने हुए हैं, कल दूसरों के भारी उत्तरदायित्व अपने कंधो पर वहन करेंगे। उनके प्रयत्नों से ऐसी सत्प्रवृत्तियाँ विनिर्मित, विकसित एवं सफल होंगी जो व्यक्ति और समाज में आज की विपन्न परिस्थितियों में आमूल-चूल परिवर्तन करके सतयुग का स्वर्गीय वातावरण सृजन करें।

यह ईश्वरीय योजना है

अखण्ड ज्योति नवंबर 1970, पृष्ठ-57 पर लिखा है कि— किसी के मन में यह आशंका नहीं रहनी चाहिए कि आचार्य जी के चले जाने के बाद अपना आंदोलन शिथिल या बंद हो जाएगा। ऐसी आशंका करने वाले यह भूल जाते हैं कि यह किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा आरंभ की हुई प्रवृत्ति नहीं है। इसके पीछे विशुद्ध रूप से ईश्वरीय इच्छा और प्रेरणा काम कर रही है। जिसके पीछे यह शक्ति काम कर रही हो उसके संबंध में किसी को आशंका नहीं करनी चाहिए। व्यक्ति असफल हो सकते हैं, भगवान के असफल होने का कोई कारण नहीं। व्यक्ति की इच्छाएँ अधूरी रह सकती हैं, भगवान की इच्छा पूरी क्यों न होगी। अब तक के आंदोलन की प्रगति को जिन लोगों ने बारीकी से देखा समझा है, उन्हें यह विश्वास करना ही चाहिए कि उपलब्ध सफलताएँ हमारे जैसे नगण्य व्यक्ति के माध्यम से किसी भी प्रकार संभव न थी। हमें निमित्त बनाकर कोई महाशक्ति अदृश्य

परिवर्तन की वेला में युगच्छवि के संदेशवाहक बनें-34

रूप से काम कर रही है। केवल आँखों के सामने कठपुतली नाचने से लोग प्रशंसा उस लकड़ी के टुकड़े की करते हैं जो नाचता दीखता है। वस्तुतः श्रेय उस बाजीगर को है जिसकी उँगलियाँ अपनी अदृश्य संचालन कला के द्वारा उस खेल का सरंजाम जुटा रही हैं।

दुराग्रही बुरी तरह कुचले जाएँगे

अखण्ड ज्योति जुलाई 1969, पृष्ठ-65 पर लिखा है कि— नया युग तेजी से बढ़ता चला आ रहा है। उसे कोई रोक न सकेगा। प्राचीनकाल की महान परंपराओं को अब पुनः प्रतिष्ठित किया जाना है और मध्यकालीन अंधकार युग की दुष्ट विषमताओं का तिरोधान होना है। महाकाल उसके लिए आवश्यक व्यवस्था बना रहे हैं और तदनुकूल आधार उत्पन्न कर रहे हैं। युग का परिवर्तन अवश्यंभावी है। हमारा छोटा-सा जीवन इसी की घोषणा करने, सूचना देने के लिए है। परिस्थिति के अनुरूप जो समय रहते बदल सकेंगे वे संतोष और सम्मान प्राप्त करेंगे और जो बदलेंगे नहीं, मूढ़ता के लिए दुराग्रह करेंगे वे बुरी तरह कुचले जाएँगे। उनके हाथ अपयश, असंतोष एवं पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ न लगेगा।

अगला कार्य महाकाल स्वयं करेंगे

अखण्ड ज्योति जुलाई 1969, पृष्ठ-65 पर लिखा है कि— हमने अपना जीवन नवयुग की पूर्व सूचना देने, महाकाल के इस महान प्रयोजन में सम्मिलित होने के लिए प्रबुद्ध आत्माओं को निमंत्रण देने में लगा दिया। जिस काम के लिए हम आए थे, पूरा होने को है। अगला काम महाकाल स्वयं करेंगे। अगले दिनों उनकी प्रेरणा से एक-से-एक बढ़कर प्रतिभाशाली और प्रबुद्ध आत्माएँ आएँगी। ये ऐसा एक व्यापक संघर्ष विश्वव्यापी परिमाण में प्रस्तुत करेंगी जो असमानता के सारे कारणों को तोड़-मरोड़कर फेंक दें और समता की मंगलमयी परिस्थितियों का शुभारंभ करके इसी धरती पर स्वर्ग का वातावरण संभव कर दिखाएँ।

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-35

गुरुदेव-माताजी का आश्वासन

अखण्ड ज्योति फरवरी 1987, पृष्ठ-58 पर लिखा है कि— सयय आ गया है कि भारत अपनी भीतरी समस्याओं को हल करके रहेगा। अभी कितनी ही ऐसी समस्याएँ दीखती हैं जिनसे आशंका होती है कि कहीं अगले दिन विपत्ति से भरे हुए तो न होंगे। चिनगारियाँ दावानल बनकर तो न फूट पड़ेंगी। बाढ़ का पानी सिर से ऊपर तो न निकल जाएगा। ऐसी आशंकाएँ करने वाले सभी लोगों को हम आश्वस्त करना चाहते हैं कि विनाश को विकास पर हावी न होने दिया जाएगा। मार्ग में रोड़े भले ही अड़चन उत्पन्न करते रहें, पर काफिला रुकेगा नहीं। वह उस लक्ष्य तक पहुँचेगा, जिससे विश्व को शांति से रहने और चैन की सांस लेने का अवसर मिल सके। वह दिन दूर नहीं कि जब भारत अग्रिम पंक्ति में खड़ा होगा और वह एक-एक करके विश्व-उलझनों के निराकरण में अपनी दैवी विलक्षणता का चमत्कारी सत्परिणाम प्रस्तुत कर रहा होगा।

माताजी का संदेश

अखण्ड ज्योति मार्च 1991, पृष्ठ-57 पर लिखा है कि—यह मिशन हजारों-लाखों वर्षों तक चलेगा क्योंकि दैवी शक्ति इसके साथ है। मिशन का सूत्र-संचालन ऐसा है कि न तो किसी को शंका करनी चाहिए, न भटकना चाहिए। यदि यह व्यक्ति पर टिका मिशन होता तो व्यक्ति के साथ ही समाप्त भी हो जाता। यह शक्ति पर टिका अभियान है, दैवी अभियान है। विवेकानंदों, निवेदिताओं ने अभी अपनी प्रसुप्त क्षमता को पहचाना नहीं है। यदि सभी जाग्रत आत्माओं को यह अनुमान हो सके कि वे क्या हैं व किन उद्देश्यों के लिए उनका अवतरण हुआ है तो देखते-देखते प्रतिकूलताओं के बीच भी नवसृजन होता चला जाएगा। पूज्यवर की परोक्ष जगत से व मेरी प्रत्यक्ष जगत से तपश्चर्या इन्हीं उद्देश्यों के निमित्त है।

संकल्प लें कि आजीवन गुरुदेव के पदचिह्नों पर ही सब चलेगे। वैसा ही उल्लास मन में बनाए रखेंगे तथा विद्या विस्तार के

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-36

सभी महत्त्वपूर्ण दायित्वों को अंतिम स्थिति तक पहुँचाकर रहेंगे। लोकमंगल के लिए ही सबका समर्पित जीवन होगा। घर-घर में गुरुजी के विचार पहुँचाकर ही रहेंगे।

युग निर्माण परिवार के सदस्य ऐसे ही लोभ, मोह में ग्रस्त, पेट और प्रजनन में व्यस्त वासना, तृष्णा के पशु समान जीवन जीकर मर जाते हैं तो यह गुरुदेव के लिए भी कलंक की बात है, इस परिवार के लिए भी लज्जा की। हाथी के बच्चे बकरी की शक्ल के दिखें, इसमें उपहास हाथी का भी है और बच्चों का भी। परिवार यदि बन ही गया तो शोभा इसी में है कि उसका स्तर भी कुलपति के अनुरूप हो।

युग परिवर्तन की प्रक्रिया अधूरी न रहेगी

अखण्ड ज्योति मई 1970, पृष्ठ-58, 59 पर लिखा है कि—
लोगों की निगाह से दूर रहें, यह हो सकता है, पर हर जागृत और जीवित आत्मा यह अनुभव करेगी कि हम उसकी अंतरात्मा में बैठकर कुहराम मचा रहे हैं और नरकीटक एवं नरपशु की जिंदगी को नर-नारायण के रूप में परिणत होने की प्रबल प्रेरणा कर रहे हैं। जो आगे बढ़ेंगे उन्हें भरपूर शक्ति देंगे। जो लड़खड़ा रहे होंगे, उन्हें संभालेंगे और जो संभल गए हैं, उन्हें आगे बढ़ने के लिए आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित करेंगे। हम जा जरूर रहे हैं, पर अगले ही दिनों एक अत्यंत प्रबल और अदृश्य शक्ति के रूप में वापस लौट रहे हैं। सृजनात्मक एवं संघर्षात्मक अभियानों का नेतृत्व दूसरे लोग करेंगे, पर बाजीगर की उँगलियों की तरह अगणित नर पुतलियों को नचाने में हमारी भूमिका भली प्रकार संपादित होती रहेगी, भले ही उसे कोई जाने या न जाने। हमारी तपश्चर्या भी वस्तुतः नव निर्माण के महान अभियान की तैयारी के लिए अभीष्ट शक्ति जुटाने की विशिष्ट प्रक्रिया भर है। हमें जिस प्रयोजन के लिए भेजा गया है उसे पूरा किए बिना एक कदम भी पीछे हटने वाले नहीं हैं। युग परिवर्तन की महान प्रक्रिया अधूरी नहीं रहने दी जा सकती। नवनिर्माण की ईश्वरीय आकांक्षा अपूर्ण नहीं रह सकती। उसको नियोजित करने

परिवर्तन की वेला में युगश्रद्धा के संदेशवाहक बनें-37

के लिए प्रतिभाओं को आगे लाया ही जाएगा। उन्हें इच्छा या अनिच्छा से देर या सबेर से आगे आना ही पड़ेगा।

शंका हमारी, समाधान गुरुदेव के

अखण्ड ज्योति जनवरी 1988, पृष्ठ-27 पर लिखा है कि— यह हिमालय के देवात्मा क्षेत्र में निवास करने वाले ऋषियों की चेतना का समन्वित अथवा उनके किसी प्रतिनिधि का सूत्र संचालन है। अन्यथा साधना-विहीन एकांकी व्यवहारकुशलता की दृष्टि से पिछड़ा हुआ व्यक्ति बड़े सपने तो देख सकता है, पर बड़े कार्यों का भार अपने दुर्बल कंधों पर नहीं उठा सकता। विशेषतया उन कार्यों को जिनकी कल्पनाएँ करते रहने वाले, योजनाएँ बनाते रहने वाले थोड़े-बहुत कदम बढ़ाते रहने पर भी हवा में उड़ने वाले गुब्बारों की तरह कुछ ही समय में ठंढे होते और अपने अस्तित्व को समाप्त करते देखे गए हैं।

सोचा जाता है कि गुरुजी 80 वर्ष की आयु को पूरा करना चाहते हैं। इस महाप्रयाण का समय अब बहुत दूर नहीं है। हाथ के नीचे वाले अनिवार्य कार्यों को जल्दी-जल्दी निबटाने की बात बनते ही चार्ज दूसरों के हाथों चला जाएगा। संदेह है कि उस दिशा में वर्तमान प्रगति रुक सकती है और व्यवस्था बिगड़ सकती है। ऐसे लोग व्यवस्था में आने वाले उतार-चढ़ावों के आधार पर अनुमान लगाते हैं। उनमें ही प्रतिभावान व्यक्तियों के हट जाने पर भट्टा बैठ जाता है और संरजाम बिखर जाता है, पर यहाँ वैसी कोई बात नहीं। न व्यक्ति विशेष ने कुछ असाधारण किया है, न उसे भूतकाल पर गर्व है, न ही वर्तमान को देखते हुए उत्साह और न भविष्य की गिरावट संबंधी कोई आशंका। कारण स्पष्ट है—कठपुतली न अपने अभिनय पर गर्व करती है और न पिटारी में बंद कर दिए जाने की शिकायत। यदि यह समझ होती, तो निश्चित ही उसकी सोच यही होती कि वह बाजीगर की उँगलियों में बँधे हुए धागों से हलचल करने वाली लकड़ी की टुकड़ी मात्र है। उसे गर्व किस बात का

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-38

होना चाहिए और अपने भविष्य की चिंता क्यों करनी चाहिए? यह काम बाजीगर का है। वही कोई गड़बड़ी होते देखेगा तो तत्परतापूर्वक सुधारेगा। आखिर लाभ-हानि तो उसी का है। मिशन के भविष्य के संबंध में भी हर किसी को इसी प्रकार सोचना चाहिए और निराशा जैसे अशुभ चिंतन को पास भी नहीं फटकने देना चाहिए। पिछले पचास वर्ष से हम दोनों दो शरीर एक प्राण बनकर नहीं वरन एक ही सिक्के के दो पहलू बनकर रहे हैं। शरीरों का अंत तो सभी का होता है, पर हम लोग वर्तमान वस्त्रों को उतार देने के उपरांत भी अपनी सत्ता में यथावत बने रहेंगे और जो कार्य सोंपा गया है उसे तब तक पूरा करने में लगे रहेंगे जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती। युग परितर्वन एक लक्ष्य है—जनमानस का परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन उसी के दो कार्यक्रम।

इस नियतिचक्र से हम लोगों के शरीर भी बच नहीं सकते। शरीर बदलने के समय में अब बहुत देर नहीं है। शरीर-परिवर्तन की वेला आते ही हमें साकार से निराकार होना पड़ेगा, पर क्षण भर में उस स्थिति से अपने को उबार लेंगे और दृश्यमान प्रतीक के रूप में उसी अखण्ड दीपक की ज्वलंत ज्योति में समा जाएंगे। भविष्य में दोनों की सत्ता एक में विलीन हो जाएगी, जिसके आधार पर अखण्ड ज्योति नाम से संबोधन अपनाया गया है।

हम लोग कुछ आगे पीछे होकर एक ही मोर्चे पर एकत्व अपनाकर कार्यरत बने रहेंगे। अपने कायक्षेत्र को हजारों गुना बढ़ा लेंगे। सफलता भी अत्यंत उच्चस्तरीय अर्जित करेंगे। मिशन तीर की तरह सनसनाता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेगा।

विश्वव्यापी परिवर्तन हेतु सक्रिय बनें

अखण्ड ज्योति सितंबर 1969, पृष्ठ-65 पर लिखा है कि— भारत के पिछले राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में कितनी जनशक्ति और कितनी धनशक्ति लगी थी, यह सर्वविदित है। यह भारत तक और उसके राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित थी। अपने अभियान का कार्यक्षेत्र उससे सैकड़ों गुना बड़ा है। अपना कार्यक्षेत्र समस्त विश्व है और

परिवर्तन की वेला में युगश्रृषि के संदेशवाहक बनें-39

राजनीति में ही नहीं वरन व्यक्ति तथा समाज के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन प्रस्तुत करने हैं। इसके लिए कितने सृजनात्मक और कितने संघर्षात्मक मोर्चे खोलने पड़ेंगे, इसकी कल्पना कोई भी दूरदर्शी कर सकता है। वर्तमान अस्तव्यस्तता को सुव्यवस्था में परिवर्तित करना एक बड़ा काम है। मानवीय मस्तिष्क की दिशा, विचारणा, आकांक्षा, अभिरुचि और प्रवृत्ति को बदल देना, निकृष्टता के स्थान पर उत्कृष्टता की प्रतिष्ठापना करना, सो भी समस्त पृथ्वी पर रहने वाले साढ़े छः अरब व्यक्तियों में निस्संदेह एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक काम है। इसमें अग्रणी व्यक्तियों, असंख्य आंदोलनों और असीम क्रियातंत्रों का समन्वय होगा। यह एक अवश्यंभावी प्रक्रिया है, जिसे महाकाल अपने ढंग से नियोजित कर रहे हैं। हर कोई देखेगा कि आज की वैज्ञानिक प्रगति की तरह कल भावनात्मक उत्कर्ष के लिए भी प्रबल प्रयत्न होंगे और उसमें एक से एक बढ़कर व्यक्तित्व एवं संगठन गजब की भूमिका प्रस्तुत कर रहे होंगे। यह सपना नहीं, सचाई है। जिसे अगले दिनों हर कोई मूर्तिमान होते हुए देखेगा। इसे भविष्यवाणी नहीं समझना चाहिए, एक वस्तुस्थिति है जिसे हम आज अपनी आँखों पर चढ़ी दूरबीन से प्रत्यक्ष देख रहे हैं। कल वह निकट आ पहुँचेगी और हर कोई उसे प्रत्यक्ष देखेगा। अगले दिनों संसार का समग्र परिवर्तन करके रख देने वाला एक भयंकर तूफान विद्युत गति से आगे बढ़ता चला आ रहा है, जो इस सड़ी दुनियाँ को समर्थ, प्रबुद्ध, स्वस्थ और समुन्नत बनाकर ही शांत होगा।

अगले क्षणों जिस स्वर्णिम उषा का उदय होने वाला है, उसके स्वागत की तैयारी में हमें जुट जाना चाहिए। अपना ज्ञानयज्ञ इसी का शुभारंभ मंगलाचरण है। असुरता को पद्दलित करने और मानवता की पुण्य प्रतिष्ठापना का अपना संकल्प ईश्वरीय प्रेरणा का प्रतीक है। उसकी व्यापकता एवं सफलता सुनिश्चित है। प्रक्रियाएँ अपने ढंग से संपन्न होनी हैं, वे परिपूर्ण होकर रहेंगी। किसी व्यक्ति के साहस की प्रतीक्षा किए बिना गति अपने पथ पर अग्रसर होती रहेगी, उठा हुआ तूफान अपने वेग से बढ़ता रहेगा। प्रश्न इतना भर है कि जिन्हें कुछ महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करनी थी, वे समय रहते

परिवर्तन की बेला में युगश्रृंखला के संदेशवाहक बनें-40

सजग हुए या अवसाद की मूर्च्छा में पड़े हुए अपने को कलंक एवं पश्चात्ताप का भागी बनाने का दुर्भाग्यपूर्ण खेल खेलते रहे।

छोड़े हुए कार्यों को कौन पूरा करेंगे

अखण्ड ज्योति फरवरी 1987, पृष्ठ-64 पर लिखा है कि— जो घटित होने वाला है उस सफलता के लिए श्रेयाधिकारी, भागीदार बनने से दूरदर्शी विज्ञजनों में से किसी को भी चूकना नहीं चाहिए। यह लोभ-मोह के लिए खपने और अहंकार प्रदर्शन के लिए ठाठ-बाट बनाने की बात सोचने और उसी स्तर की रीति-नीति अपनाये रहने का समय नहीं है। औसत नागरिक स्तर का निर्वाह और परिवार को बढ़ाने की अपेक्षा स्वावलम्बी बनाने का निर्धारण किया जाए, तो वह बुद्धिमत्ता भरा लाभदायक निर्धारण होगा जिनसे इतना बन पड़ेगा, वे देखेंगे कि उनके पास युगसृजन के निमित्त कितना अधिक तन, मन, धन का वैभव समर्पित करने योग्य बच जाता है। जबकि लिप्साओं में ग्रस्त रहने पर व्यस्तता और अभावग्रस्तता की ही शिकायत बनी रहती है। श्रेय संभावना की भागीदारी में सम्मिलित होने का सुयोग-सौभाग्य जिन्हें अर्जित करना है, हमारी ही तरह भौतिक जगत में संयमी-सेवार्थी बनना पड़ेगा। सादा जीवन उच्च विचार का मंत्र अपने रोम-रोम में जमाना पड़ेगा। इतना कर सकने वाले ही अगले दिनों की दिव्य भूमिकाएँ, हमारे छोड़े उत्तराधिकार को वहन कर सकेंगे।

उत्तराधिकारी की खोज

अखण्ड ज्योति दिसंबर 1964, पृष्ठ-49, 50 पर लिखा है कि—युग निर्माण योजना, शतसूत्री कार्यक्रमों में बाँटी हुई है। वे यथास्थान, यथास्थिति, यथासंभव कार्यान्वित भी किए जा रहे हैं, पर एक कार्यक्रम अनिवार्य है और वह यह कि इस विचारधारा को जन-मानस में अधिकाधिक गहराई तक प्रविष्ट कराने, उसे अधिकाधिक व्यापक बनाने का कार्यक्रम पूरी तत्परता के साथ जारी रखा जाए। हम थोड़े व्यक्ति युग को बदल डालने के लिए

परिवर्तन की वेला में युगश्रष्टि के संदेशवाहक बनें-41

पर्याप्त नहीं। धीरे-धीरे समस्त मानव समाज को सद्भावना संपन्न एवं सन्मार्गगामी बनाना होगा और यह तभी संभव है जब यह विचारधारा गहराई तक जनमानस में प्रविष्ट कराई जा सके। इसलिए अपने आस-पास के क्षेत्र में इस प्रकाश को व्यापक बनाए रखने का कार्य तो परिवार के प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति को करते ही रहना होगा। अन्य कोई कार्यक्रम कहीं चले या न चले, पर यह कार्य तो अनिवार्य है कि इस विचारधारा से अधिकाधिक लोगों को प्रभावित करने के लिए निरंतर समय, श्रम, तन एवं मन लगाया जाता रहे। जो ऐसा कर सकते हैं, जिनमें ऐसा करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई है, उन्हें हम अपना उत्तराधिकारी कह सकते हैं। धन नहीं, लक्ष्य हमारे हाथ में है, उसे पूरा करने का उत्तरदायित्व भी हमारे उत्तराधिकार में किसी को मिल सकता है। उसे लेने वाले भी कोई बिरले ही होंगे। इसलिए उनकी खोज तलाश आरंभ करनी पड़ रही है।

गुरुदेव के प्राणप्रिय बनें

अखण्ड ज्योति दिसंबर 1964, पृष्ठ-51 पर लिखा है कि— हमारी परंपरा पूजा उपासना की अवश्य है, पर व्यक्तिवाद की नहीं। अध्यात्म को हमने सदा उदारता सेवा और परमार्थ की कसौटी से कसा है और स्वार्थी को खोटा एवं परमार्थी को खरा कहा है। गायत्री परिवार में दोनों ही प्रकार के खरे-खोटे लोग मौजूद हैं। अब इनमें से उन खरे लोगों की तलाश की जा रही है जो हमारे हाथ में लगी हुए मशाल को जलाए रखने में अपना हाथ लगा सकें, हमारे कंधे पर लदे हुए बोझ को हलका करने में अपना कंधा लगा सकें। ऐसे ही लोग हमारे प्रतिनिधि या उत्तराधिकारी होंगे। इस छोट में जो लोग आ जाएँगे उनसे हम आशा लगाए रहेंगे कि मिशन का प्रकाश एवं प्रवाह आगे बढ़ाते रहने में उनका श्रम एवं स्नेह अनवरत रूप से मिलता रहेगा। हमारी आशा के केंद्र यही लोग हो सकते हैं और उन्हें ही हमारा सच्चा वात्सल्य भी मिल सकता है। बातों से नहीं काम से ही किसी की निष्ठा परखी जाती है और जो निष्ठावान हैं उनको दूसरों का हृदय जीतने में सफलता मिलती है।

परिवर्तन की वेला में युगश्रद्धा के संदेशवाहक बनें-42

कर्मठता की चुनौती और समर्थता की खोज

अखण्ड ज्योति अगस्त 1969, पृष्ठ-16 पर लिखा है कि—
राष्ट्र का भावनात्मक नवनिर्माण करने के लिए प्रचार कार्य तो सर्वोपरि है ही, साथ ही ऐसे रचनात्मक और संघर्षात्मक कार्य भी आरंभ करने हैं जिनके आधार पर जनसाधारण को कुछ करने, होने तथा बदलने का प्रत्यक्षीकरण दिखाई पड़े। विचारों में परिपक्वता कार्यों से आती है। क्रिया और भावनाओं से मिलकर ही वे संस्कार बनते हैं जिन पर व्यक्तित्वों का स्तर निर्भर रहता है। इसलिए हम सदा प्रचार ही न करते रहेंगे। यह तो हमारा प्रथम चरण है। जैसे ही प्रचार के समुद्र मंथन से कुछ नर-रत्न हाथ लगेंगे उनको रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यों में उनकी क्षमता, योग्यता एवं प्रतिभा के अनुरूप कार्य में सलग्न होने की प्रेरणा देंगे।

कृष्ण जानते थे कि सही और पूरा काम कराने के लिए व्यक्ति को उस कार्य की उपयोगिता, आवश्यकता एवं फलितार्थों को बताया जाना आवश्यक है। असंतुष्ट और अन्यमनस्क अर्जुन उपेक्षा भाव से लड़ने भी लगा तो उसमें समुचित शौर्य एवं मनोयोग का समावेश न होगा और अंततः महाभारत का उद्देश्य ही निष्फल हो जाएगा। अस्तु, गीता प्रवचन को प्राथमिक किंतु अति आवश्यक कर्तव्य समझकर भगवान ने पहले उसे ही हाथ में लिया। इसके बाद ही महाभारत निर्माण का पुण्य प्रयोजन पूरा किया जा सका।

अपने सामने भी दुर्बल, दिग्भ्रांत, दरिद्र, तमसाच्छन्न, नगण्य एवं तुच्छ बने हुए भारत को समर्थ, समृद्ध और प्रबुद्ध भारत का निर्माण करना था। भारत चिर-अतीत से महान रहा अब फिर उसे महान ही बनना होगा। जनशक्ति का अर्जुन अभी मोह और अवसादग्रस्त हो रहा है। उसका 'कार्पण्य' हटाया जाना शेष है। इसके लिए युगगीता गानी पड़ेगी। युग निर्माण योजना की विचार-क्रांति गीता गायन पाँचजन्य का तुमुल नाद है। नवनिर्माण का विकल्प केवल सर्वनाश है। दोनों में से एक को चुनना होगा। निश्चय ही हम

परिवर्तन की वेला में युगश्लेष के संदेशवाहक बनें-43

सर्वनाश नहीं चुन सकते। नवनिर्माण की जिम्मेदारी स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। सो इच्छा और अनिच्छा से इसी ओर चलना होगा। नियति हम प्रबुद्धता संपन्न अंतःकरण वालों को इसी दिशा में नियोजित करके रहेगी।

आज का जनमानस बहुत करके कुमार्गगामी और दुर्भावना युक्त हो रहा है, इसलिए हर क्षेत्र में एक से एक घृणित और कष्टकारक दुष्प्रवृत्तियाँ पनपती दीखती हैं। उनका उपचार, मानव जाति का समान रूप से बौद्धिक कायाकल्प करना ही है। इसके लिए पग-पग पर रचनात्मक सत्प्रवृत्तियाँ खड़ी करनी होंगी और ऐसे संघर्षात्मक मोर्चे खड़े करने पड़ेंगे जो अभ्यस्त अपराधियों एवं मूढ़ मान्यताओं से ग्रसित लोगों को अपनी कुचाल छोड़ने के लिए मजबूर कर सकें।

उपर्युक्त कार्यों के लिए एक ऐसी जनशक्ति का उदय होना चाहिए जो पेट-प्रजनन से कुछ ऊँचा उठकर सोच सकें और वासना-तृष्णा के लिए मरते-खपते रहने से आगे बढ़कर देश, धर्म, समाज, संस्कृति के लिए कुछ सेवा-सहयोग की, त्याग-बलिदान की बात सोच सकें। कर्मठ लोकसेवियों की जनशक्ति उदय हुए बिना सुधार की सारी विचारणाएँ मनोरंजक कल्पनाएँ मात्र बनकर रह जाएँगी। प्राण तो कर्मठता में रहता है, निर्माण तो पुरुषार्थ से होता है। इसलिए अपने चारों ओर बिखरे हुए नर-पशुओं में हमें मनुष्यता का प्रकाश, गर्व और शौर्य उत्पन्न करना है ताकि वह स्वार्थ-संकीर्णता की परिधि से बाहर निकलकर कुछ ऐसा कर सकें जैसा कि प्रबुद्ध और सजग आत्माएँ अपने स्वरूप, तत्त्व एवं कर्तव्य का स्मरण करके प्रयत्न करती रहती हैं।

निर्माण के लिए कर्मठता कहीं से जगे और शायद प्रसुप्त मानवीय गर्व-गौरव, शौर्य-साहस, विवेक-सौहार्द जगता मिल जाए, इसी ढूँढ़-खोज में से बीन-बीनकर महाकाल अगले दिनों युग निर्माताओं की एक जनशक्ति खड़ी करेगा और वे विश्वशांति के प्रहरी स्वयं कष्ट उठाकर लोकमंगल के महान प्रयोजन को पूरा करेंगे।

परिवर्तन की वेला में युगत्रय के संदेशवाहक बनें-44

साहसी व्यक्ति खोजना है

अखण्ड ज्योति जनवरी 1965, पृष्ठ-50 पर लिखा है कि— हमें अपने परिवार में अब ऐसे व्यक्ति ढूँढ़ने हैं जिन्होंने अध्यात्म का वास्तविक स्वरूप समझ लिया हो और जीवन की सार्थकता के लिए चुकाए जाने वाले मूल्य के बारे में जिन्होंने अपने भीतर आवश्यक साहस एकत्रित करना आरंभ कर दिया हो। हम अपना उत्तराधिकार उन्हें ही सौंपेंगे। बेशक धन-दौलत की दृष्टि से उन्हें कुछ भी मिलने वाला नहीं है। हमारे अंतःकरण में जलने वाली आग की एक चिनगारी ही उनके हिस्से में आएगी, पर वह इतनी अधिक मूल्यवान है कि उसे पाकर कोई भी व्यक्ति धन्य हो सकता है।

ज्ञानयज्ञ की मशाल का प्रयोजन

अखण्ड ज्योति सितंबर १९६९, पृष्ठ-५९, ६० पर लिखा है कि—जनमानस का भावनात्मक नवनिर्माण करने के लिए जिस विचारक्रांति की मशाल इस ज्ञानयज्ञ के अंतर्गत जल रही है, उसके प्रकाश में अपने देश और समाज का आशाजनक उत्कर्ष सुनिश्चित है। स्वतंत्र चिंतन के अभाव ने हमें मूढ़ता और रूढ़िवादिता के गर्त में गिरा दिया। तर्क का परित्याग कर हम भेड़िया धसान के अंधविश्वास के दल-दल में फँसते चले गए। विवेक छोड़ा तो उचित-अनुचित का ज्ञान ही न रहा। गुण-दोष विवेचन की, नीर-क्षीर विश्लेषण की प्रज्ञा नष्ट हो जाए तो फिर अँधेरे में ही भटकना पड़ेगा। हम ऐसी ही दुर्दशा-ग्रस्त विपन्नता में पिछले दो हजार वर्ष से जकड़ गए हैं। मानसिक दासता ने हमें हर क्षेत्र में दीन-हीन और निराश, निरुपाय बनाकर रख दिया है। इस स्थिति को बदले बिना कल्याण का और कोई मार्ग नहीं। मानसिक मूढ़ता में ग्रसित समाज के उद्धार के सभी द्वार बंद रहते हैं। प्रगति का प्रारंभ स्वतंत्र चिंतन से होता है। लाभ में विवेकवान रहते हैं। समृद्धि साहसी के पीछे चलती है। इन्हीं सत्प्रवृत्तियों का जनमानस में बीजारोपण और अभिवर्द्धन करना अपनी विचारक्रांति का एक मात्र उद्देश्य है। ज्ञानयज्ञ की मशाल इसी दृष्टि से प्रज्वलित की गई है।

परिवर्तन की वेला में युगश्रृंखला के संदेशवाहक बनें-45

मशाल जलती रहेगी

अखण्ड ज्योति अगस्त १९६९, पृष्ठ-२, ३ पर लिखा है कि— ईश्वरीय प्रेरणा ने इन दिनों एक ऐसे ही युग निर्माण आंदोलन का सृजन किया है जिसका उद्देश्य है—जनमानस की विपन्न विचारशैली को बदलकर फिर विवेक और औचित्य के आधार पर सोचने और करने का अवसर मिले। जड़ विचारणा में सन्निहित है, पर विचारों के साथ क्रिया संबद्ध है और क्रिया सुधरे तो परिस्थितियों के सुधरने में कुछ देर नहीं लगती। अस्तु, विचार परिवर्तन का एक विश्वव्यापी अभियान इन दिनों आरंभ हुआ है। यद्यपि उसका स्वरूप असुरता के विशाल कलेवर की तुलना में नगण्य जैसा है, पर जो सचाई की शक्ति जानते हैं उन्हें यह विश्वास करने में कठिनाई नहीं होती कि छोटे से प्रकाश के आगे अंधकार का विशाल कलेवर गल जाता है और छोटी-सी चिनगारी सुविस्तृत वनों को जलाकर राख कर देती है। विवेकशीलता का तेल और औचित्य के कपड़े को लेकर मशाल जलाई गई है, वह यों ही बुझ जाने वाली नहीं है। यह अपने युग की महत्तम आवश्यकता एवं ईश्वरीय इच्छा पूरी होने तक जलती ही रहेगी।

आत्मीय अनुरोध

हमारे आत्मीय भाई-बहनों ने इस पुस्तक के माध्यम से युगऋषि पूज्य गुरुदेव के अंतःकरण से निकले चिंतन को पढ़ा। हमारा अनुरोध है कि यह पुस्तक हमें बार-बार पढ़ते रहना चाहिए। जब भी निराशा आएगी, पूज्यवर पुनः ऐसी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन देंगे कि महाकाल की सत्ता हमें चैन से बैठने न देगी। अब बातें करने, चर्चा करने, कार्यक्रम बनाने, सोचने का समय नहीं है। यह सब बहुत हो चुका, अब तो बस जागो, उठो और लक्ष्य प्राप्त होने तक प्राणपण से कार्य में जुट जाओ। पूज्य गुरुदेव एक भजन की पंक्तियाँ प्रायः गुनगनाया करते थे। 'तू तो धुन रे धुनियाँ अपनी धुन, अपनी धुन, न पराई सुन।' हमारे मार्गदर्शन के लिए युगऋषि की वाणी, हमारी आत्मा की पुकार ही काफी है। हमारे जैसे व्यक्तित्व के लिए जिस

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-46

मार्ग पर चलना उपयुक्त है, वही मार्ग हम चुनेंगे। दूसरे क्या करते हैं, इसकी चिंता कौन करे? जब युगऋषि को अपना मार्गदर्शक चुन लिया तो अवरोधों, विरोधों, व्यंग, उपहास, अपयश, हानि की चिंता कौन करे? जिसके चरणों में अपना जीवन समर्पित कर दिया, अब जीवन की बागडोर जिसके हाथ सौंप दी, वही यह सब देखेगा। हमारा कार्य एक ही है कि उनके बताए मार्ग पर चल पड़ें, उनके छोड़े कार्यों को पूरा करने में अपना पूरा जीवन लगा दें। इसी में जीवन की सार्थकता है। पूज्यवर के चिंतन को जन-जन में फैला देना है, उनके संदेशवाहक बनना है। ज्ञानयज्ञ प्रचारक बनने के लिए यदि पंजीयन नहीं कराया है तो तुरंत पंजीयन कराना है। पंजीयन के लिए युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, मथुरा के नाम 100 रुपया पंजीयन राशि भेजना है। अपने परिकर के परिचितों को यह पुस्तक पढ़ाएँ। यदि उनके अंदर कुछ प्राण दिखाई दे तो उन्हें युगऋषि का संदेशवाहक बनने के लिए तैयार करें और उनका पंजीयन करा दें। अब समय आ गया है, युग परिवर्तन की बेला अति निकट है। गिराज उठने ही वाला है, अपनी लाठी लगाकर श्रेय के अधिकारी बनें। लंका विजय होने ही वाली है। राम की सेना के रीछ वानर बनने में जो भ्रम में पड़े रहेंगे, वे बाद में पछताते रहेंगे। हमें पछताना नहीं है। युगऋषि के पुत्र आगे बढ़कर उनकी जलाई ज्ञानयज्ञ की मशाल को थामेंगे, उनके सपनों को साकार करेंगे। परिजनों के पत्रों का स्वागत करेंगे कि वे इस पुस्तक को पढ़ने के बाद क्या करने जा रहे हैं। युगऋषि की चेतना ने उनके अंतःकरण में क्या प्रेरणा भरी है? क्या वे नियमित अंशदान और समयदान का सदुपयोग ज्ञानयज्ञ के लिए करने के लिए तैयार हैं। जन्मशताब्दी पुस्तकमाला और प्रज्ञा लघु पुस्तकमाला की पुस्तकें बड़ी संख्या में जन-जन तक पहुँचाने के लिए आप क्या प्रयास करने जा रहे हैं।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद यदि कुछ करने की प्रेरणा अंदर से उठ रही हो तो इस पुस्तक का उत्तरार्द्ध एक अन्य पुस्तक 'ज्ञानयज्ञ, क्या करें? कैसे करें?' में प्रकाशित किया गया है। यह

परिवर्तन की वेला में युगऋषि के संदेशवाहक बनें-47

पुस्तक उन प्राणवान भाई-बहनों को अवश्य पढ़नी चाहिए, जिन्होंने अपना ज्ञानयज्ञ प्रचारक का पंजीयन करा लिया है। इस पुस्तक में ज्ञानयज्ञ की सभी योजनाएँ विस्तार से दी गई हैं। इसमें कार्य करने की विधि भी स्पष्ट दी गई है। अतः पाठकों से निवेदन है कि युगऋषि के संदेशवाहक ज्ञानयज्ञ प्रचारक का पंजीयन करा लें और इस पुस्तक से कार्य करने की दिशा ज्ञात करके महाकाल के कार्य में अपना हाथ आगे बढ़ाएँ। हमारी आपसे यही अपेक्षा है।



युग साहित्य के स्वाध्याय में ही
मानव में देवत्व, धरती पर स्वर्ग का
अवतरण एवं युग निर्माण
सत्संकल्प पूरा करने की शक्ति है।

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

ज्ञानयज्ञ की ज्योति जलाने
हम घर-घर में जाएँगे।

ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल
सदा जलेगी सदा जलेगी।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा